संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-23 अंक- 08
पृष्ठ 8
बुधवार
23 सितम्बर 2026
प्रात: संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- कॉकरोच भगाने का ट्विंकल...
विचार- हर देश के लिए जरूरी है शांति...
खेल- भारत ने श्रीलंका को 147 रन से...

नियुक्ति पाने वालों से पैसे मांगने वाले को जेल में सड़ना पड़ेगा : योगी

अब कोई सैफई सिंडिकेट नही कर सकता प्रतिभावान छात्रों के हितों पर डकैती डालने का दुस्साहस

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित करते हुए कहा कि अब कोई सैफई सिंडिकेट प्रतिभावान छात्रों के हितों पर डकैती डालने का दुस्साहस नहीं कर सकता। उत्तर प्रदेश पुलिस में अच्छा काम करने वाले अधिकारियों को आयोग और बोर्डों की दिशा–दशा सुधारने का दायित्व दिया गया है। पहले युवाओं को उनके अधिकार से वंचित कर दिया जाता था। अब नियुक्ति पाने वाले किसी भी अभ्यर्थी से पैसे की मांग करने वाले को जेल में सड़ना पड़ेगा। आज का कार्यक्रम केवल नियुक्ति पत्र वितरण का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा से जुड़े चारों स्तंभ, सहायक अध्यापक, प्रवक्ता, प्रधानाध्यापक और प्रधानाचार्य को एक साथ जोड़ने वाला विशेष अवसर है। यहां 3,567 लोगों का चयन कर उनके हाथों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने का महत्वपूर्ण दायित्व दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज 3,567 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र दिए जा रहे हैं और पिछले एक सप्ताह में वह 5,297 युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित कर चुके हैं। पिछले नौ वर्ष में 9.5 लाख युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए गए हैं। हमने सैफई सिंडिकेट से कहा है कि हम नियुक्ति पत्र देते जाएंगे, वे गिनते जाएं। सीएम ने तंज कसा कि यदि गिनती नहीं आती हो तो शिवपाल यादव के सानिध्य में बैठ जाएं, बहुत अच्छी गिनती सीख जाएंगे। मुख्यमंत्री ने हाल में नियुक्ति पत्र प्राप्त करने वाले एक नौजवान के इंटरव्यू का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि उस युवक की आंखों में आंसू भरे थे और उसने बताया कि 2015–16 में भी उसने इस पद के लिए आवेदन किया था। उससे आठ लाख रुपये की मांग की गई थी। वह खेत बेचकर पैसा लेकर आया, लेकिन तब तक उससे अधिक पैसा देने वाला दूसरा व्यक्ति आ गया और वह नौकरी से वंचित रह गया। आज उसका सपना साकार हुआ है और जिस पद के लिए उसने आवेदन किया था, उसी पद पर उसे नियुक्ति मिल गई है। पूरी प्रक्रिया निरस्त की गई और उस युवा को नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। सरकार ने कैशलेस चिकित्सा सुविधा सभी शिक्षकों को दी है। यह सुविधा शासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को भी दी गई है। बेसिक शिक्षा में रसोइयों, शिक्षामित्रों और अन्य संबंधित कर्मियों को भी इसका लाभ दिया गया है, जिससे वे निश्चिंत होकर कार्य कर सकें। किसी भी शिक्षक को ज्वाइनिंग में दिक्कत नहीं होनी चाहिए। यदि किसी प्रबंधक की कोई जिज्ञासा है तो वह शासन के समक्ष उपलब्ध कराए, लेकिन नियुक्ति पत्र प्राप्त होने के बाद यदि किसी प्रधानाचार्य, प्रधानाध्यापक, प्रवक्ता या शिक्षक से किसी ने लेनदेन की बात की तो उसे जेल में सड़ना पड़ेगा। हमें सख्त सख्त कार्रवाई पर मजबूर होना पड़ेगा। नौ साल में साढ़े नौ लाख युवाओं को सरकारी नौकरी दी गई है। अगले छह महीने के अंदर एक लाख और युवाओं को सरकारी नौकरी देने जा रहे हैं। जब लोग परिणाम पूछते हैं तो मैं कहता हूं कि परिणाम यह है कि जो उत्तर प्रदेश नौ वर्ष पहले बीमारू राज्य कहा जाता था, आज भारत की अर्थव्यवस्था का ग्रोथ इंजन बना हुआ है।

जल संरक्षण से ही सुरक्षित होगा देश का भविष्य : राधाकृष्णन

नयी दिल्ली,एजेंसी। उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने जल संसाधनों के समझदारी भरे इस्तेमाल, संरक्षण और एकीकृत प्रबंधन पर जोर देते हुए कहा है कि पानी बचाने के छोटे–छोटे प्रयास मानवता और दुनिया के हित में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, इसलिए जन समुदाय और राष्ट्र का हित सुरक्षित करने के लिए सभी को जल संरक्षण में अपना योगदान देना चाहिए। श्री राधाकृष्णन ने मंगलवार को यहां भारत मंडपम में 26 सितंबर तक चलने वाले 9वें इंडिया इंटरनेशनल वॉटर वीक–2026 का उद्घाटन करते हुए कहा कि जल ही जीवन और सभ्यताओं का आधार है लेकिन जलवायु परिवर्तन, तेजी से हो रहे शहरीकरण और बढ़ती आबादी के कारण जल संसाधनों का प्रबंधन लगातार चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। जल शक्ति मंत्रालय के इस पांच दिवसीय कार्यक्रम का मुख्य विषय जलवायु के अनुकूल जल प्रबंधन है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत में दुनिया के कुल भू–भाग का करीब 2.4 प्रतिशत और वैश्विक आबादी का 18 प्रतिशत हिस्सा है जबकि वैश्विक मीठे पानी के संसाधनों में भारत की हिस्सेदारी केवल चार प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि इसलिए भारत की जल जरूरतों की तुलना अधिक जल उपलब्धता और कम आबादी वाले देशों से नहीं की जा सकती है। उन्होंने कहा कि भारत की पारंपरिक जल संरक्षण व्यवस्था आज की जल संबंधी चुनौतियों से निपटने में बहुमूल्य सीख देती है। नदी–बेसिन प्रबंधन, भूजल पुनर्भरण, वर्षा जल संचयन और प्रभावी सिंचाई व्यवस्था सहित एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने पर जोर देते हुए उन्होंने नागरिकों से रोजमर्रा के जीवन में पानी बचाने के छोटे–छोटे उपाय अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि नहाने और दांत साफ करने जैसे कामों में भी पानी की बचत के प्रयास मानवता और दुनिया के हित में हो सकते हैं। श्री राधाकृष्णन ने पानी के बेहतर इस्तेमाल, पुनर्चक्रण और पुनरू उपयोग की आवश्यकता पर जोर देते हुए जल प्रबंधन को प्रतिक्रियात्मक से बदलकर पूर्वानुमान आधारित और प्रौद्योगिकी संचालित बनाने का आह्वान किया।

जमुई मामले पर तेजस्वी यादव का हमला, सीएम सम्राट चौधरी से मांगा इस्तीफा

पटना,एजेंसी। राजद नेता तेजस्वी यादव ने जमुई में दो नाबालिग छात्राओं के साथ हुई घटना को लेकर बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के इस्तीफ़े की मांग की है। उन्होंने कहा कि वीडियो से पता चलता है कि राज्य में महिलाएं और लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं। यादव ने चौधरी के उस पुराने बयान का भी ज़िक्र किया जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर मुंगेर में किसी को कोई नुकसान पहुँचता है, तो वे इस्तीफ़ा देने के लिए तैयार हैं। यादव ने कहा कि बिहार सरकार की पूरे देश में आलोचना हो रही है। चौधरी की पुरानी बातों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सम्राट चौधरी ने खुद पहले कहा था, मुंगेर जाइए... अगर किसी के साथ कुछ होता है या किसी को नुकसान पहुँचता है, तो मैं इस्तीफ़ा देने के लिए तैयार हूँ। वीडियो पर प्रतिक्रिया देते हुए यादव ने कहा कि आज यह वीडियो दिखाता है कि बिहार में महिलाएं और लड़कियां कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं... चाहे दिन हो या रात, घर हो या सड़क, कॉलेज हो या स्कूल, या फिर अस्पताल। उन्होंने आगे कहा कि बिहार में महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ अपराध जिस तरह से बढ़ रहे हैं, वह बेहद शर्मनाक है। इसके बाद यादव ने चौधरी को सीधे चुनौती दी कि वे अपने पहले दिए गए बयान पर कायम रहें। उन्होंने कहा कि अगर सम्राट चौधरी अपनी बात पर कायम हैं, तो हिम्मत हो तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि अगर वे अपनी कही बात पर कायम नहीं रह सकते, तो ऐसे डींगें हांकने वाले मुख्यमंत्री का कोई मतलब नहीं है। यादव ने उस वीडियो का भी ज़िक्र किया और सत्ताधारी गठबंधन के सदस्यों की प्रतिक्रिया की आलोचना की। उन्होंने कहा कि आप सभी ने वीडियो देखा होगा, और दुख की बात यह है कि सत्ताधारी गठबंधन के लोग इसे सही ठहराने की कोशिश कर रहे हैं।

टाटा ट्रस्ट की विरासत बचाना जरूरी, टाटा संस विवाद पर बोले शरद पवार

नई दिल्ली,एजेंसी। नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने टाटा ग्रुप की ट्रस्ट–आधारित विरासत की रक्षा करने का आह्वान किया है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ग्रुप के चौरिटेबल ओनरशिप स्ट्रक्चर और संस्थागत भूमिका को बनाए रखा जाना चाहिए। एक्स पर पोस्ट किए गए एक बयान में पवार ने कहा कि लीडरशिप को लेकर चल रहे विवाद को बातचीत, उचित प्रक्रिया और टाटा संस के आर्टिकल्स ऑफ़ एसोसिएशन का सख्ती से पालन करते हुए सुलझाया जाना चाहिए। पवार ने टाटा ग्रुप को महाराष्ट्र में गहरी जड़ें रखने वाला एक राष्ट्रीय संस्थान बताया। उन्होंने कहा कि इसकी विरासत इस सिद्धांत पर बनी है कि कारोबार से बनाई गई संपत्ति का इस्तेमाल आखिरकार समाज की भलाई के लिए होना चाहिए। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि टाटा ट्रस्ट्स की संस्थागत भूमिका और गवर्नेंस के अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए। ये ट्रस्ट मिलकर टाटा संस में लगभग 66 प्रतिशत हिस्सेदारी रखते हैं, जो इस ग्रुप की मुख्य होल्डिंग कंपनी है। उनके ये बयान टाटा संस बोर्ड की 17 सितंबर को हुई बैठक के बाद आए हैं, जिसमें डायरेक्टर्स ने एन. चंद्रशेखरन को अगले पांच साल के लिए एग्जीक्यूटिव चेयरमैन के तौर पर फिर से नियुक्त करने के लिए वोट किया था। चार डायरेक्टर्स ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया, जबकि टाटा ट्रस्ट्स के चेयरमैन नोएल टाटा ने इसका विरोध किया।

ट्राई का बड़ा फैसला:

कंपनियों को बिना डेटा वाले प्लान का देना होगा विकल्प, ग्राहकों को मिल सकेगी किफायती सेवा

नई दिल्ली। भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने कम आय वाले दूरसंचार उपभोक्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। ट्राई ने दूरसंचार सेवा प्रदाताओं को कम वैधता वाले केवल वॉइस कॉल और एसएमएस प्लान पेश करने का निर्देश दिया है। इन प्लान में उचित टैरिफ कटौती भी करनी होगी। इस निर्णय से उन उपभोक्ताओं को अधिक किफायती और लचीले रिचार्ज विकल्प मिलेंगे, जिन्हें डेटा सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। ट्राई ने अपने दूरसंचार उपभोक्ता संरक्षण (तेरहवां संशोधन) विनियम, 2026 में यह बात कही है। इस कदम से उपभोक्ताओं को अपनी आवश्यकताओं और वित्तीय क्षमता के अनुसार रिचार्ज करने के अधिक विकल्प मिलेंगे। नए ढांचे के तहत, सेवा प्रदाताओं को 30 दिन और उससे कम की वैधता अवधि वाले केवल वॉइस और एसएमएस एसटीवी (विशेष टैरिफ वाउचर) पेश करने होंगे। इसके साथ ही, वर्तमान में वॉइस, एसएमएस और डेटा के लिए दिए जा रहे एसटीवी की वैधता अवधि के अनुरूप टैरिफ में उचित कमी भी करनी होगी। ट्राई ने अपने एक आधिकारिक बयान में बताया कि दूरसंचार उपभोक्ता संरक्षण (बारहवां संशोधन), 2024 के कार्यान्वयन के बाद बाजार में केवल वॉइस और एसएमएस एसटीवी की उपलब्धता सीमित हो गई थी। उपलब्ध प्लान मुख्य रूप से लंबी वैधता अवधि पर केंद्रित थे। इससे कम आय वाले उपभोक्ताओं को किफायती कम अवधि के विकल्पों से वंचित होना पड़ रहा था। नियामक ने महसूस किया कि इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता है।

क्या हैं नए प्लान विकल्प?

नए निर्देशों के तहत, ऑपरेटरों को एक ऐसा केवल वॉइस और एसएमएस एसटीवी भी देना होगा जिसे हर महीने एक ही तारीख पर नवीनीकृत किया जा सके। यदि किसी विशेष महीने में संबंधित नवीनीकरण की तारीख उपलब्ध नहीं है, तो नवीनीकरण उस महीने की अंतिम तारीख को होगा। इसके अतिरिक्त, दूरसंचार ऑपरेटरों को कम और मासिक वैधता विकल्पों से लंबी वैधता वाला कम से कम एक केवल वॉइस और एसएमएस एसटीवी भी पेश करना होगा। यह प्लान भी वॉइस, एसएमएस और डेटा के लिए दिए जा रहे एसटीवी की वैधता अवधि के अनुरूप होगा।

प्रॉपर्टी विवाद में जाली स्टे ऑर्डर पेश करने पर दिल्ली हाई कोर्ट सख्त, दिए जांच के आदेश

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली हाई कोर्ट ने प्रॉपर्टी से जुड़े एक विवाद की सुनवाई के दौरान अपने ही एक न्यायिक आदेश में छेड़छाड़ का मामला सामने आने पर इस ओर ध्यान दिलाया है और आदेश दिया है कि सक्षम अधिकारी इस मामले की जांच करें। यह आदेश 18 सितंबर को जस्टिस पुरुषेंद्र कुमार कौरव ने मीना देवी और एक अन्य याचिकाकर्ता की याचिका पर दिया था। याचिकाकर्ताओं ने दिल्ली के खेड़ा खुर्द गांव के विस्तारित लाल डोरा इलाके में 175 वर्ग गज ज़मीन के प्लॉट से जुड़े धोखाधड़ी और जालसाजी के आरोपों पर पुलिस की कार्रवाई न करने की शिकायत की थी। कोर्ट के आदेश के अनुसार, याचिकाकर्ताओं ने पहले ही 7 सितंबर, 2026 को दिल्ली पुलिस मुख्यालय में पुलिस कमिश्नर को एक विस्तृत शिकायत सौंपी थी। बहस के दौरान, उनके वकील ने ेै। 101/2024 में 19 नवंबर, 2024 को पारित हाई कोर्ट के आदेश के तौर पर पेश किए गए दस्तावेज़ का हवाला दिया।

प्रियंका ने महिला सुरक्षा पर जताई चिंता: कहा– अगर सड़कों पर सुरक्षा नहीं, तो बड़ी-बड़ी योजनाओं का क्या फायदा?

तिरुवनंतपुरम,एजेंसी। कांग्रेस नेता और वायनाड से लोकसभा सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने मंगलवार को दिल्ली और बिहार में महिलाओं के साथ हुए हालिया हमलों पर गहरी चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के खिलाफ ऐसे अपराध न केवल बढ़ रहे हैं, बल्कि पहले से कहीं अधिक हिंसक होते जा रहे हैं। उन्होंने केंद्र सरकार और राज्य सरकारों से अपील की है कि वे सड़कों पर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करें। वायनाड में पत्रकारों से बातचीत

करते हुए प्रियंका गांधी ने कहा कि महिलाओं के लिए पहले से ही माहौल असुरक्षित था और अब यह स्थिति और ज्यादा खराब होती जा रही है। उन्होंने कहा– यह बढ़ रहा है। महिलाओं के लिए हमेशा से असुरक्षित माहौल रहा है, लेकिन अब महिलाओं के प्रति हिंसा और ज्यादा बर्बर होती जा रही है। मेरा मानना है कि अगर हम सड़कों पर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकते, तो बड़ी–बड़ी योजनाओं और कार्यक्रमों की बातें करने का कोई मतलब नहीं रह जाता। केरल के दौरे पर पहुंचीं कांग्रेस सांसद ने कहा– हर किसी को महिला सुरक्षा के मुद्दे पर बेहद गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा, यह सचमुच एक ऐसा विषय है जिस पर हम सभी को सोचना चाहिए। जहां भी राज्य सरकारें हैं और विशेष रूप से केंद्र सरकार, उन्हें इस बात पर विचार करना होगा कि वे महिलाओं को सुरक्षित महसूस कराने के लिए क्या कदम उठाने जा रहे हैं।

आप दफ्तर के पते पर 58 कंपनियां रजिस्टर्ड: पार्टी ने कहा– चुनाव से पहले भाजपा ने रची बदनाम करने की साजिश

नई दिल्ली,एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) ने अपने राष्ट्रीय कार्यालय के पते पर 58 अज्ञात कंपनियों के पंजीकरण

का दावा करते हुए दिल्ली पुलिस और जीएसटी विभाग से शिकायत की है। पार्टी का आरोप है कि नई दिल्ली स्थित उसके राष्ट्रीय कार्यालय के पते का इस्तेमाल कर इन कंपनियों का पंजीकरण कराया गया है। आप ने इसे आगामी विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी को बदनाम करने की कथित साजिश बताया है। आप की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय 1, कैनिंग लेन, नई दिल्ली के पते पर जुलाई से सितंबर के बीच 58 कारोबारों का जीएसटी पंजीकरण कराया गया। उनका दावा है कि इन पंजीकरणों के लिए आधार सत्यापन भी किया गया है। भारद्वाज ने कहा कि पार्टी ने मामले की शिकायत प्रिंसिपल चीफ कमिश्नर, जीएसटी, दिल्ली के कमिश्नर, डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेड एंड टैक्सेस और नई दिल्ली के पुलिस कमिश्नर से की है।

नीट–यूजी: केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में कहा–एनटीए में ढांचागत सुधार जारी, परीक्षा को सीबीटी मोड में कराने पर हो

नई दिल्ली,एजेंसी। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि जारी सुधारों के तहत नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) को फंक्शनल–वर्टिकल स्ट्रक्चर, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों की नियुक्ति और खास प्रोफेशनल पदों के निर्माण के जरिए मजबूत किया जा रहा है। एनटीए के कामकाज में सुधार से जुड़ी याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में दायर एक अतिरिक्त हलफनामे में, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने बताया कि अगस्त 2026 में परीक्षा संस्था में कुल 14 अधिकारियों को तैनात किया गया था। इनमें एक संयुक्त सचिव, चार निदेशक, एक संयुक्त निदेशक, दो उप सचिव, दो अवर सचिव, दो अनुभाग अधिकारी और दो सहायक अनुभाग अधिकारी शामिल थे। यह हलफनामा सुप्रीम कोर्ट के उस आदेश के पालन में दायर किया गया था जिसमें शिक्षा मंत्रालय को विशेषज्ञों की उच्च–स्तरीय समिति (एचएलसीई), जिसके प्रमुख इसरो के पूर्व चेयरमैन के राधाकृष्णन हैं, की सिफारिशों को लागू करने की प्रक्रिया का विवरण रिकॉर्ड पर रखने का निर्देश दिया गया था। केंद्र सरकार ने कहा कि एनटीए को षफंक्शनल–वर्टिकल स्ट्रक्चरष (कार्यात्मक–ऊर्ध्वाधर संरचना) में पुनर्गठित किया जा रहा है ताकि खास क्षेत्रों में क्षमता निर्माण किया जा सके। यह पुरानी व्यवस्था की जगह लेगा जिसमें कर्मचारियों को परीक्षा–वार वर्टिकल में तैनात किया जाता था। हलफनामे में कहा गया, षफंक्शनल–वर्टिकल स्ट्रक्चर क्षमता के हर मुख्य क्षेत्र में खास क्षमता निर्माण को सक्षम बनाता है जबकि पुरानी संरचना में एनटीए के मानव संसाधनों को विशिष्ट परीक्षा–वार वर्टिकल में तैनात किया जाता था।ष इसमें कहा गया कि एनटीए के शीर्ष नेतृत्व की कमान अब भारत सरकार के सचिव स्तर के अधिकारी के पास है जो इसके महानिदेशक (डीजी) के रूप में काम कर रहे हैं। साथ ही, डीजी के पद को संयुक्त सचिव स्तर से अतिरिक्त सचिव स्तर तक अपग्रेड करने और पांच वरिष्ठ संयुक्त सचिव–स्तर के पद बनाने के प्रस्तावों पर सक्रिय रूप से विचार किया जा रहा है।

व्यापारियों ने यूपीआई को दी श्रद्धांजलि

प्रयागराज। डिजिटल क्रांति का वाहक बनी यूपीआई को अब व्यापारियों ने प्रतीकात्मक रूप से मृत घोषित कर पोस्टर जारी किया है। 0.47 प्रतिशत मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) लगाए जाने के विरोध में राष्ट्रीय उद्योग व्यापार महामंडल (प्रयागराज व्यापार मंडल) के पदाधिकारियों ने यूपीआई की अंतिम यात्रा निकालकर श्रद्धांजलि दी। व्यापार मंडल की ओर से जारी शोक

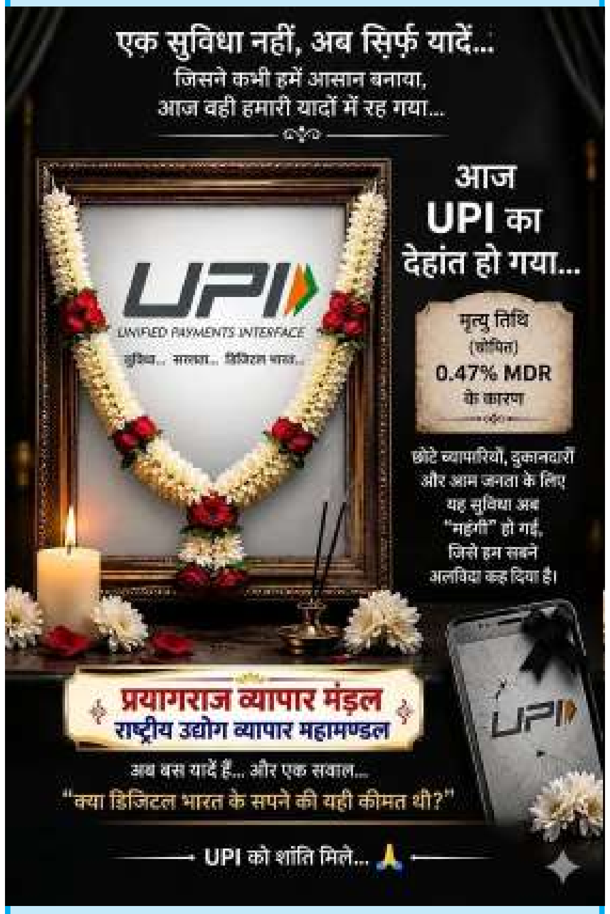

पोस्टर में यूपीआई को माला पहनाकर श्रद्धांजलि दी गई। जिलाध्यक्ष सुशांत कुमार केसरवानी ने कहा कि यूपीआई ने देश के कोने–कोने में डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा दिया। अब इस पर शुल्क लगाने का फैसला छोटे कारोबारियों के लिए अतिरिक्त आर्थिक बोझ बन सकता है। चेयरमैन मनीष कुमार गुप्ता ने कहा कि व्यापारियों ने डिजिटल भुगतान व्यवस्था को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसे समय में एमडीआर लगाने की बात से व्यापारी वर्ग में असंतोष पैदा होना स्वाभाविक है। युवा जिलाध्यक्ष प्रियंक कुमार गुप्ता और नगर अध्यक्ष संतोष गुप्ता ने कहा कि जब देश को डिजिटल लेनदेन की ओर ले जाया गया, तब व्यापारियों ने इसे पूरी तरह अपनाया। अब शुल्क लगाने की कवायद से व्यापारियों में आक्रोश है। व्यापार मंडल ने कहा कि यदि 0.47 प्रतिशत एमडीआर का प्रस्ताव वापस नहीं लिया गया तो जिले में आंदोलन तेज किया जाएगा। संगठन ने जरूरत पड़ने पर व्यापारिक गतिविधियां ठप कर विरोध दर्ज कराने की चेतावनी भी दी। प्रतीकात्मक श्रद्धांजलि कार्यक्रम में दीपक गुप्ता, प्रशांत पांडेय, धीरज केसरवानी, रोहित गुप्ता, इंजीनियर विवेक गुप्ता, राजीव तिवारी, जय प्रकाश नारायण केसरवानी आदि रहे।

यूपीआई लेन–देन पर 15 अक्तूबर से लगने वाले शुल्क के विरोध में व्यापारी संगठन आंदोलित हैं। व्यापारी एकता समिति ने मंगलवार को कलक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। प्रदेश अध्यक्ष विजय गुप्ता ने शोषण बंद करने का आह्वान किया। प्रदेश महामंत्री प्रमिल केसरवानी ने महंगाई बढ़ने की आशंका जताई। 22 सितंबर को जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया जाएगा।

दरोगा पति का बयान दर्ज, अब कंचन के मोबाइल फोन से तलाशे जाएंगे सुराग

प्रयागराज। धूमनगंज के पारस ग्रीन अपार्टमेंट में अधिवक्ता कंचन शर्मा की आत्महत्या के मामले में पुलिस ने दरोगा पति जितेंद्र सिंह का बयान दर्ज किया है। जितेंद्र ने पुलिस को बताया कि उसने पत्नी को आवाज लगाई और दरवाजा खटखटाया पर अंदर से कोई जवाब नहीं मिला। इस पर दरवाजा तोड़कर वह अंदर पहुंचा तो कंचन का शव फंदे से लटका मिला। कमरे में पत्नी ने अपने आप ही फंदा लगाया था। पुलिस पति के बयान के साथ कंचन के मोबाइल फोन से मिलने वाले डिजिटल साक्ष्यों की भी जांच कर रही है। घटनास्थल से सुसाइड नोट नहीं मिला है। ऐसे में पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि घटना से पहले कंचन ने किन लोगों से बातचीत की, किससे चौट की। कॉल डिटेल, मैसेज, चौट और मोबाइल में मौजूद अन्य डिजिटल साक्ष्यों की जांच की जाएगी। पुलिस पति के बयान में बताए गए घटनाक्रम का घटनास्थल से मिले साक्ष्यों से मिलान करेगी। पुलिस नामजद आरोपियों और मायके पक्ष के लोगों के बयान भी दर्ज करेगी। जांच में वैवाहिक विवाद, दहेज की मांग और घटना से पहले पति–पत्नी के बीच बातचीत से जुड़े पहलुओं को शामिल किया गया है। पुलिस अफसरों के मुताबिक दरोगा जितेंद्र सिंह को धूमनगंज थाने से हटाकर पुलिस लाइन भेज दिया गया है, ताकि जांच प्रभावित न हो। डीसीपी सागर जैन ने बताया कि दोनों के बीच किस बात का विवाद चल रहा था, इसकी जांच की जा रही है।

गुलमोहर ग्रीन्स सोसाइटी में अवैध निर्माण की जांच के लिए एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गाजियाबाद के मोहन नगर स्थित गुलमोहर ग्रीन्स सोसाइटी में बिना निवासियों की सहमति के अतिरिक्त मंजिलों और फ्लैटों के निर्माण के मामले की जांच के लिए दो एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त किए हैं। कोर्ट ने अधिवक्ता संजय कुमार ओम और प्रखर कुमार श्रीवास्तव को मौका मुआयना कर विस्तृत रिपोर्ट सौंपने का जिम्मा सौंपा है। यह आदेश न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव, न्यायमूर्ति सुधांशु चौहान की खंडपीठ ने सुरेश चंद्र और 10 अन्य की याचिका पर दिया है। याचिका में आरोप लगाया गया है कि बिल्डर ने यूपी अपार्टमेंट एक्ट, 2010 के नियमों का उल्लंघन कर निवासियों की सहमति के बिना अतिरिक्त निर्माण शुरू कर दिया। 18 दिसंबर 2024 को जारी तीसरे कंपाउंडिंग आदेश के जरिये अवैध रूप से 112 अतिरिक्त फ्लैटों को मंजूरी दी गई, जिनमें टावर नंबर 16 से 19 में दो–दो अतिरिक्त मंजिलें और टावर 27 व 28 में निर्माण शामिल है। निवासियों का तर्क है कि जिन टावरों में लोग पहले से रह रहे हैं, वहां इस तरह का निर्माण कार्य से उन्हें खतरा है। वहीं, बिल्डर और अन्य प्रतिवादियों ने याचिकाकर्ताओं के दावों पर आपत्ति जताई। कोर्ट की ओर से वास्तविक स्थिति की पड़ताल के लिए एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त करने के प्रस्ताव पर दोनों पक्षों ने अपनी सहमति दी। कोर्ट के आदेशों के अनुसार दोनों एडवोकेट कमिश्नर 19 और 20 सितंबर निरीक्षण करेंगे। इस दौरान परियोजना में मौजूद कुल टावरों की संख्या, प्रत्येक टावर में मंजिलों व फ्लैटों की स्थिति, निर्माणाधीन व पूर्ण हो चुके फ्लैटों का ब्योरा और टावर 16 से 19 की ऊपरी मंजिलों की स्थिति की गहन जांच की जाएगी।

सरस्वती हाईटेक सिटी में दस साल बाद भी बुनियादी सुविधाओं का टोटा

प्रयागराज। वर्ष 2016 में विकसित सरस्वती हाईटेक सिटी दस साल बाद भी बुनियादी सुविधाओं के लिए तरस रही है। आवंटियों का आरोप है कि ए, बी और सी ब्लॉक में केवल पांच फीसदी सुविधाएं ही विकसित हो पाई हैं।

बिजली, पानी, सड़क, सुरक्षा और जल निकासी जैसी मूलभूत जरूरतें पूरी न होने से परिवारों में आक्रोश बढ़ रहा है। सी ब्लॉक के प्रवीण सिंह ने बताया कि उनके प्लॉट का बिजली बॉक्स काम नहीं करता। उन्हें दूर से कनेक्शन खींचकर घर तक बिजली पहुंचानी पड़ रही है।

पानी की व्यवस्था भी सवालों के घेरे में है। उत्तम मिश्रा के अनुसार, पानी की पाइप लाइन कागजों तक सीमित है। नियमित जलापूर्ति न होने से परिवारों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। अनुपम सिंह, प्रवीण सिंह, अशोक सिंह और अजय राज जैसे आवंटियों का कहना है कि टाउनशिप में अस्पताल, बाजार,

मॉल, थाना और फायर ब्रिगेड जैसी सुविधाएं नहीं हैं।

अनुपम श्रीवास्तव ने बताया कि रोजमर्रा की जरूरतों के लिए उन्हें बाहर निर्भर रहना पड़ता है। बुनियादी ढांचे के अभाव में घर का निर्माण कराना भी चुनौती है। टाउनशिप में हरियाली और मनोरंजन के लिए विकसित पार्क की स्थिति खराब है। निवासियों के अनुसार, पार्क में जलभराव के कारण वह उपयोग के लायक नहीं रहा।

जुर्माना वसूली पर नाराजगी और संघर्ष का निर्णय

शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त प्रभाकर त्रिपाठी समेत कई आवंटियों ने जुर्माने और ब्याज का विरोध किया है। उनका सवाल है कि जब बुनियादी सुविधाएं विकसित नहीं हुईं, तो देरी की पेनल्टी किस आधार पर ली जा रही है। लगातार समस्याओं से परेशान आवंटियों ने अब एक समिति पंजीकृत कराई है। यह समिति परियोजना में कथित अनियमितताओं, विकास कार्यों में देरी और सुविधाओं की कमी के खिलाफ आवाज उठाएगी।

आवंटन के बाद लोग मकान नहीं बना रहे हैं। ऐसे लोगों को एक वर्ष का समय दिया गया था। लेकिन निर्माण नहीं कराएं। शासनादेश के तहत ही नोटिस दी गई हैं। जहां तक बिजली का सवाल है, लोग कनेक्शन नहीं ले रहे हैं। पार्क में बाढ़ के कारण पानी भर गया हैं। जो भी समस्याएं है उसे जल्द दूर किया जाएगा। –संतोष कुमार, जीएम यूपीसीडा

प्रतियोगी छात्रों ने शिक्षा निदेशालय घेरा, बोले–

हम लाठी खाने को तैयार

प्रयागराज। प्रतियोगी छात्रों का आंदोलन तेज होता जा रहा है। सोमवार को अनशन के 16वें दिन बड़ी संख्या में प्रतियोगी छात्र धरनास्थल पर पहुंचे। करीब चार घंटे तक धरनास्थल पर प्रदर्शन करने के बाद सभी पैदल ही शिक्षा निदेशालय पहुंच गए। बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात रही। निदेशालय पहुंचकर अपर शिक्षा निदेशक कामता राम पाल के कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करने लगे।

सैकड़ों की संख्या में प्रतियोगी छात्र व छात्राएं नारेबाजी करते रहे। हाथों में तिरंगा व गांधीजी की फोटो लेकर अभ्यर्थियों ने कहा, हम पुलिस की लाठी खाने को तैयार हैं, जेल जाने को तैयार हैं लेकिन जब तक हमारी मांग नहीं पूरी हो जाती है तब तक हम यहां से नहीं हटेंगे।

दरअसल, टीजीटी–पीजीटी के अभ्यर्थी पुरानी नियमावली से भर्ती प्रक्रिया पूरी कराए जाने की मांग कर रहे हैं। इस मांग के समर्थन में वह लगातार धरना स्थल पर धरना व अनशन जारी रखे हुए हैं। आंदोलन में शामिल प्रतियोगी छात्र विजय बहादुर गौतम की रविवार को हुई मौत के बाद आंदोलन और तेज हो गया। इसका असर यह रहा कि सोमवार को छात्रों की संख्या ज्यादा हो गई।

निदेशालय पहुंचे छात्र तो करते रहे। छात्रों ने कहा, निदेशालय पहुंचने के बाद विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी कार्यालय छोड़कर चले गए और छात्रों से कोई वार्ता नहीं की गई। नेतृत्व कर रहे आशुतोष पांडे ने कहा कि छात्रों को अब 20 लाख रुपये सहायता राशि व एक भाई को सरकारी नौकरी दी जाए। मृतक छात्र मूलतः जौनपुर जनपद के मुस्तफाबाद का रहने वाला था। पिता खदेरूराम की पहले ही मौत हो चुकी है। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। वहीं, अनशन पर बैठे चार अभ्यर्थी रोशन सरोज, प्रवीण कुमार, शिमला पटेल व मीना देवी भी अस्वस्थ हैं। वह लगातार प्रदर्शन के बीच जमीन पर ही लेटे हुए हैं।

कई अधिकारी निकल गए बाहर

प्रतियोगी छात्र करीब तीन बजे शिक्षा निदेशालय में नारेबाजी करते हुए प्रवेश करते हैं। यहां पहले से ही बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात रही। छात्रों की भीड़ को देखते हुए अपर शिक्षा निदेशक माध्यमिक कामता राम पाल के ऑफिस को बंद कर दिया दिया। छात्र जमीन पर ही बैठकर नारेबाजी केवल आश्वासन नहीं चाहिए, बल्कि उनके भविष्य से जुड़े इस विषय पर ठोस निर्णय चाहिए।

परिजन को 20 लाख रुपये व नौकरी दे सरकार

प्रतियोगी छात्र विजय बहादुर गौतम के मौत से छात्रों में नाराजगी हैं। आशुतोष पांडेय व शंशाक दुबे ने कहा, मृतक प्रतियोगी छात्र के परिजनों को

राज्यपाल से गोल्ड मेडल पाने वाली श्रेया भी शामिल

श्रेया मालवीय भदोही जनपद की रहने वाली हैं। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में राज्यपाल के हाथों गोल्ड मेडल पाने वाली श्रेया अपने पिता शोभाराम के साथ प्रयागराज पहुंची थीं और धरने में शामिल हुईं। श्रेया कहती हैं, हाईस्कूल में वह जनपद की टॉपर थी। जेआरएफ, एसआरएफ व पीएचडी भी कर चुकी हैं। जॉब नहीं मिली। लगातार प्रतियोगी छात्र यहां धरने पर बैठे हैं, मैं भी इसमें शामिल होने के लिए यहां आई हूं।

अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा श्री अमित कुमार घोष ने मेजर आशाराम त्यागी की शहादत दिवस पर पुष्प चक्र अर्पित कर किया नमन

मेजर आशाराम त्यागी के शौर्य एवं बलिदान को राष्ट्र सदैव रखेगा स्मरणः अमित कुमार घोष

कॉलोनी के नवनिर्मित प्रवेश/निकास द्वार का 'मेजर आशाराम त्यागी, एमवीसी (मरणोपरांत) स्मृति द्वार' का चीफ ऑफ स्टाफ, मुख्यालय सेंट्रल कमांड लेफ्टिनेंट जनरल सी.जे. जयचंद्रन ने किया उद्घाटन

लखनऊ। अपर मुख्य सचिव उच्च शिक्षा श्री अमित कुमार घोष ने कहा कि मेजर आशाराम त्यागी जैसे वीर सपूतों के अदम्य साहस और सर्वोच्च बलिदान के कारण ही आज राष्ट्र की सुरक्षा सुदृढ़ है। डोगराई की लड़ाई में प्रदर्शित उनका शौर्य और बलिदान सदैव स्मरणीय रहेगा। अमित कुमार घोष ने यह विचार आर्मी वेलफेयर हाउसिंग ऑर्गनाइजेशन (एडब्ल्यूएचओ) कॉलोनी, आशियाना, लखनऊ स्थित त्यागी विहार में महावीर चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित मेजर आशाराम त्यागी की शहादत दिवस के अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि एवं स्मृति समारोह में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि वर्ष 1998 में एडब्ल्यूएचओ कॉलोनी स्थित इस आवासीय परिसर का नाम युद्ध नायक मेजर आशाराम त्यागी, एमवीसी (मरणोपरांत), के सम्मान में 'त्यागी विहार' रखा गया था। मेजर आशाराम त्यागी ने 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान डोगराई की ऐतिहासिक लड़ाई में अदम्य साहस का परिचय देते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे।

अपर मुख्य सचिव ने कहा कि त्यागी विहार का आदर्श वाक्य "। भ्वउम, ।

ब्वउउनदपजल, । स्मंहंबल" है, जबकि प्रवेश द्वार पर "भ्वउम ठनपसज वद टंसवत" अंकित है। उन्होंने कहा कि आज का यह समारोह केवल स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि राष्ट्र के वीर नायकों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः समर्पित करने का अवसर भी है। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि मेजर आशाराम त्यागी जैसे वीर सपूतों के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जाएगा।

उन्होंने कहा कि त्यागी विहार के निवासियों ने अपने वीर नायक मेजर आशाराम त्यागी की स्मृति को सदैव जीवंत रखा है। यह अत्यंत गर्व एवं सम्मान का विषय है कि कॉलोनी के नवनिर्मित प्रवेश/निकास द्वार का नामांकरण श्मेजर आशाराम त्यागी, एमवीसी (मरणोपरांत) स्मृति द्वार' किया जा रहा है। उनकी स्मृति में स्थापित प्रतिमा एवं नवनिर्मित प्रवेश एवं निकास द्वार आने वाली पीढ़ियों और युवाओं को उनके असाधारण साहस, देशभक्ति तथा राष्ट्रसेवा की भावना से निरंतर प्रेरित करती रहेगी।

इससे पहले अपर मुख्य सचिव श्री अमित कुमार घोष ने मेजर आशाराम त्यागी की प्रतिमा पर पूरे सम्मान के साथ पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कॉलोनी के नवनिर्मित प्रवेश/निकास द्वार का श्मेजर आशाराम त्यागी, एमवीसी (मरणोपरांत) स्मृति द्वार' का चीफ ऑफ स्टाफ, मुख्यालय सेंट्रल कमांड लेफ्टिनेंट जनरल सी.जे. जयचंद्रन ने उद्घाटन किया। समारोह में त्यागी विहार की माताओं, बहनों, पत्नियों, बच्चों एवं वयोवृद्ध सैनिकों की सक्रिय भागीदारी उल्लेखनीय रही। रंगोली सज्जा, आयोजन व्यवस्था एवं यातायात प्रबंधन से लेकर बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम ''स्मृति संध्या द् एक शाम शहीदों के नाम'' तक, सभी ने मिलकर वीर शहीद को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

उत्तर मध्य रेलवे ने 'ज़ीरो स्क्रैप मिशन' के तहत 4.95 लाख से अधिक अनुपयोगी पीएससी/पीआरसी स्लीपरों का किया सफलतापूर्वक निस्तारण

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे ने रेल परिसर को पूरी तरह से कचरा मुक्त बनाने और अनुपयोगी संपत्तियों के कुशल प्रबंधन के उद्देश्य से चलाए जा रहे श्ज़ीरो स्क्रैप मिशनश के तहत इस वित्तीय वर्ष 2026–27 में कुल 4,95,323 अनुपयोगी पीएससी/पीआरसी स्लीपरों को सफलतापूर्वक बेचा है।

इस उल्लेखनीय सफलता के लिए महाप्रबंधक श्री नरेश पाल सिंह महोदय के कुशल दिशा–निर्देशों और प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री एस.पी. द्विवेदी महोदय के मार्गदर्शन में स्क्रैप के निस्तारण कार्य को अत्यधिक गति दी जा रही है।

इस वृहद स्क्रैप निस्तारण प्रक्रिया से न केवल रेलवे को अतिरिक्त राजस्व प्राप्त हुआ है, बल्कि स्टेशनों और रेल पटरियों के किनारे पड़ी बहुमूल्य रेलवे भूमि पूरी तरह से खाली हो गई है।

इस विशेष अभियान में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हुए, प्रयागराज मंडल ने अकेले सितंबर 2026 में ही 1,41,644 पीएससी/पीआरसी स्लीपरों का निस्तारण किया है। इसके साथ ही, चालू वित्तीय वर्ष में अब तक कुल 3,46,731 स्लीपरों का निस्तारण किया जा चुका है। यह पिछले वित्तीय वर्ष 2025–26 की समान अवधि (सितंबर माह तक) में निस्तारित किए गए कुल 86,755 स्लीपरों की तुलना में अत्यधिक है, जिसके सापेक्ष प्रयागराज मंडल ने इस वित्तीय वर्ष में स्लीपर निस्तारण का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

उत्तर मध्य रेलवे श्ज़ीरो स्क्रैप मिशनश के अंतर्गत रेल परिसरों को स्वच्छ, सुरक्षित और कबाड़ मुक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। अनुपयोगी स्क्रैप के त्वरित निस्तारण से न केवल रेल परिचालन व सुरक्षा सुदृढ़ होती है, बल्कि श्स्वच्छ भारत अभियानश के उद्देश्यों की पूर्ति के साथ रेलवे को अतिरिक्त राजस्व भी प्राप्त होता है। उत्तर मध्य रेलवे संपूर्ण जोन को स्पूर्णतः स्क्रैप मुक्तश करने के संकल्प के साथ निरंतर प्रयासरत है।

स्वच्छता ही सेवा–2026' के अंतर्गत प्रयागराज मंडल में 22 सितंबर को विशेष स्वच्छता अभियान

'स्टेशनों, रेलगाड़ियों एवं सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता पर विशेष जोर'

प्रयागराज समंडल में 'स्वच्छता ही सेवा–2026' अभियान के अंतर्गत रेलवे परिसरों, स्टेशनों एवं रेलगाड़ियों को स्वच्छ, सुंदर एवं व्यवस्थित बनाए रखने के उद्देश्य से दिनांक 22 सितंबर 2026 को ''स्वच्छ स्टेशन, स्वच्छ रेलगाड़ी एवं स्वच्छ पब्लिक'' थीम के तहत विशेष स्वच्छता अभियान संचालित किया जा रहा है।

इस अभियान के अंतर्गत प्रयागराज मंडल के सभी स्टेशनों पर विशेष सघन स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। स्टेशनों पर साफ–सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने के साथ यात्रियों एवं रेल कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है। स्टेशनों पर सूखे एवं गीले कचरे के लिए अलग–अलग डस्टबिन के

उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है तथा यात्रियों को कचरा निर्धारित डस्टबिन में डालने के लिए जागरूक किया जा रहा है। साथ ही, प्लेटफॉर्म एवं स्टेशन परिसरों को प्लास्टिक–मुक्त रखने के लिए यात्रियों एवं दुकानदारों को जागरूक किया जा रहा है। 'स्वच्छ रेलगाड़ी' अभियान के अंतर्गत अधिकारियों एवं पर्यवेक्षकों की टीमों द्वारा चयनित एवं महत्वपूर्ण ट्रेनों का विशेष निरीक्षण किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान श्ट्रेनों में शौचालयों, कोच के अंदर एवं बाहर की साफ–सफाई, लिनेन की गुणवत्ता तथा पैंट्री कार की स्वच्छता की जांच की जा रही है। पाई जाने वाली कमियों को तत्काल दूर कराने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, स्टेशनों पर नालियों एवं शौचालयों की विशेष सफाई सुनिश्चित की जा रही है। जिन स्थानों पर सौर ऊर्जा संचालित उपकरण लगाए गए हैं, उन्हें चालू एवं कार्यशील स्थिति में रखने पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

रेलवे कार्यालयों में भी स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए 'क्लीन डेस्क', 'कम–से–कम प्रिंट' एवं 'डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन' की कार्यप्रणाली को अपनाने पर जोर दिया जा रहा है। बैठकों एवं कार्यालयीन गतिविधियों में एकल–उपयोग वाली वस्तुओं के स्थान पर पुनः उपयोग की जा सकने वाली बोतलों एवं कपों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। 'स्वच्छता ही सेवा–2026' का उद्देश्य केवल सफाई गतिविधियों तक सीमित न रहकर रेलवे परिसरों में स्वच्छता की स्थायी व्यवस्था विकसित करना, यात्रियों एवं रेल कर्मचारियों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा जनभागीदारी के माध्यम से स्वच्छ एवं बेहतर रेलवे वातावरण का निर्माण करना है। रेलवे द्वारा यात्रियों एवं आमजन से अपील की जा रही है कि वे रेलवे परिसरों एवं रेलगाड़ियों में स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें, कचरा निर्धारित डस्टबिन में ही डालें, प्लास्टिक का अनावश्यक उपयोग न करें तथा 'स्वच्छ स्टेशन, स्वच्छ रेलगाड़ी एवं स्वच्छ पब्लिक' के संकल्प को सफल बनाने में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

कानपुर इकाई की काव्यगोष्ठी सम्पन्न

कानपुर। शहर समता विचार मंच कानपुर इकाई की महिला काव्य गोष्ठी श्रद्धा श्रीवास्तव के संयोजन एवम् अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि

शहर समता की राष्ट्रीय संयोजक सीमा वर्णिका जी रहीं।

यह काव्य गोष्ठी सांय 4.30 बजे से 6.00बजे तक चली जिसका शुभारंभ अध्यक्षता कर रही श्रद्धा श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती की मूर्ति में माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति सुनीता गुप्ता द्वारा की गयी। काव्य गोष्ठी का कुशल संचालन पुष्पा सिंह ने किया। इस काव्य गोष्ठी में सुनीता गुप्ता, सुषमा त्रिपाठी, सुषमा सिंह उर्मि, रेखा श्रीवास्तव, पुष्पा सिंह, पूनम पांडे,हेमा पांडे, श्रद्धा श्रीवास्तव एवम् सीमा वर्णिका ने अपनी सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चांद लगा दियें। धन्यवाद ज्ञापन श्रद्धा श्रीवास्तव ने किया।

गौचर भूमि कब्जामुक्त कराओ, नशे पर लगे रोकः महामंडलेश्वर

दाऊजी महाराज के दर्शन के बाद बोले स्वामी गोपाल नंद भारती, मुख्यमंत्री को भेजेंगे ब्रज की समस्याओं का ब्यौरा

बलदेव। पंचायती अखाड़ा निरंजनी के महामंडलेश्वर स्वामी गोपाल नंद भारती ने मंगलवार को बलदेव पहुंचकर श्री

दाऊजी महाराज के दर्शन किए। इसके बाद प्रेसवार्ता में उन्होंने ब्रज की समस्याओं को लेकर प्रशासन और जिम्मेदारों पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि गौचारण भूमि और सरकारी नालों पर अवैध कब्जों के कारण गोवंश परेशान है। सरकारी भूमि को चिन्हित कर तत्काल कब्जामुक्त कराया जाना चाहिए। उन्होंने प्रशासन से इस दिशा में प्रभावी कार्रवाई की मांग की। महामंडलेश्वर ने बलदेव क्षेत्र में शराब और नशे के बढ़ते कारोबार पर भी चिंता जताई। कहा कि नशा समाज के लिए खतरा बन रहा है और सरकार को इस पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रज की इन समस्याओं को लेकर जल्द ही जिला प्रशासन के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को अवगत कराया जाएगा। साथ ही सरकारी भूमि को कब्जामुक्त कराने और नशे के कारोबार पर अंकुश लगाने की मांग रखी जाएगी।

अजय मालवीय सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उर्दू विभाग की बोर्ड ऑफ स्टडीज में बाह्य विशेषज्ञ नियुक्त

सिद्धार्थनगर। उर्दू एवं हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार, आलोचक, शोधकर्ता, अनुवादक, विचारक, भाषाविद् एवं शायर डॉ. अजय मालवीय 'बहार इलाहाबादी' को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के उर्दू विभाग में बोर्ड ऑफ स्टडीज के बाह्य विशेषज्ञ के रूप में

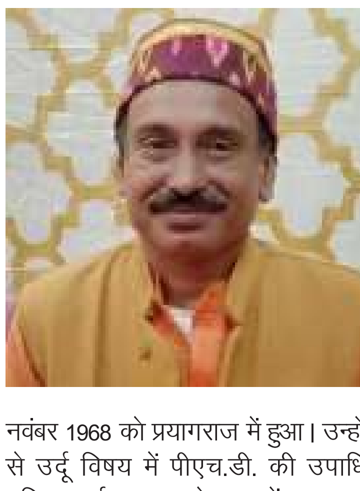

नामित किया गया है। विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग की ओर से जारी पत्र में उन्हें एकीकृत बीए एवं एमए उर्दू पाठ्यक्रम के लिए गठित बोर्ड ऑफ स्टडीज में बाह्य विशेषज्ञ के रूप में शामिल किया गया है।

डॉ. अजय मालवीय का जन्म 6 नवंबर 1968 को प्रयागराज में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उर्दू विषय में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान में वे वरिष्ठ उर्दू प्रवक्ता के रूप में अध्यापन कार्य से जुड़े हैं। हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, पंजाबी, फारसी एवं अरबी भाषाओं के अध्ययन से उनका व्यापक साहित्यिक एवं भाषायी जुड़ाव है।

डॉ. मालवीय की हिंदी और उर्दू में अब तक 21 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी चर्चित कृतियों में उर्दू में हिन्दू धर्म, उर्दू सीखें, श्रीमद्भगवद्गीता, वैदिक अदब और उर्दू, प्रेमचंद स्वानेह ब तस्वीर, है राम के वजूद पे हिंदुस्तां को नाज़, नई फिक्रियाती जिहात, नंद किशोर विक्रम शख्सियत और फिक्र–ओ–फन, जदीदियत के अलमबरदार शम्सुर्रहमान फारूकी, तखलीकात–1, तखलीकात–2, एहसास की खुशबू और गुबार–ए–फिक्र प्रमुख हैं। हिंदी में सीताराम, उर्दू में रामकथा तथा ज़र्द मौसम का सफर भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

साहित्य और शोध के क्षेत्र में उनकी सक्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उनके लगभग 150 शोध–पत्र एवं ग़ज़लें विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। वे अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक–सैद्धांतिक मंचों पर शोधपत्र और व्याख्यान भी प्रस्तुत कर चुके हैं।

डॉ. अजय मालवीय की चर्चित पुस्तक 'वैदिक अदब और उर्दू' उर्दू शब्द की उत्पत्ति तथा भाषा के विकास से जुड़े महत्वपूर्ण विमर्श पर केंद्रित है। साहित्य, भाषा और शोध के क्षेत्र में उनके लंबे अकादमिक अनुभव को देखते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के बोर्ड ऑफ स्टडीज में बाह्य विशेषज्ञ के रूप में उनका नामांकन महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

रज्जू भैया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में 'लघुकथा लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत विद्यार्थियों ने दिखाई सृजनात्मक प्रतिभा

प्रयागराज। प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत 22 सितंबर 2026 को 'लघुकथा लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साह एवं उमंग के साथ प्रतिभाग किया और अपनी मौलिक लघुकथाओं के माध्यम से रचनात्मक प्रतिभा, कल्पनाशीलता तथा समकालीन जीवन के प्रति अपनी संवेदनशील दृष्टि का परिचय दिया। विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता ने कार्यक्रम को जीवंत एवं सार्थक बना दिया।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, कला संकाय प्रो. आशुतोष कुमार सिंह के मार्गदर्शन एवं समन्वय में आयोजित इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मक क्षमता, मौलिक चिंतन, अभिव्यक्ति–कौशल और साहित्यिक संवेदना को विकसित करना रहा। विभाग द्वारा हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न रचनात्मक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन विद्यार्थियों को हिंदी के साथ सक्रिय रूप से जोड़ने और उन्हें अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से किया जा रहा है।

प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. अलका मिश्रा एवं डॉ. अजीत सिंह रहे, जबकि डॉ. बबलू यादव एवं शोधार्थी अमित कुमार यादव ने सह–संयोजक के रूप में आयोजन को व्यवस्थित रूप से संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आयोजन से पूर्व विद्यार्थियों को प्रतियोगिता की रूपरेखा, लघुकथा की विधागत विशेषताओं तथा लेखन में मौलिकता और सृजनात्मकता के महत्व को अवगत कराया।

लघुकथा हिंदी साहित्य की ऐसी महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें सीमित शब्दों में जीवन के किसी विशेष प्रसंग, सामाजिक स्थिति, मानवीय संवेदना अथवा विडंबना को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है। अपने संक्षिप्त कलेवर के बावजूद लघुकथा पाठक के समक्ष व्यापक जीवन–संदर्भ उपस्थित करने की क्षमता रखाती है। समकालीन समय की तीव्र गति और बदलते सामाजिक परिवेश में लघुकथा की प्रासंगिकता और भी बढ़ी है।

इसी साहित्यिक एवं शैक्षिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को लघुकथा लेखन

के माध्यम से अपने आसपास के जीवन और समाज को देखने तथा उसे रचनात्मक अभिव्यक्ति देने का अवसर प्रदान किया गया। प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों को केवल लेखन के लिए प्रेरित नहीं किया, बल्कि उन्हें अपने अनुभवों, संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों पर विचार करन का मौका मिला।

प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों और जीवन–संदर्भों को अपनी लघुकथाओं का आधार बनाया। उनकी रचनाओं में मानवीय संबंधों, पारिवारिक जीवन, सामाजिक परिवर्तन, संवेदना, संघर्ष, युवा मन, बदलते जीवन–मूल्यों और समकालीन समाज की विभिन्न परिस्थितियों की झलक दिखाई दी। विद्यार्थियों ने कम शब्दों में अपनी बात प्रभावशाली ढंग से कहने का प्रयास किया।

कई प्रतिभागियों की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ के प्रति सजग दृष्टि दिखाई दी, वहीं कुछ रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं और संबंधों की सूक्ष्म पड़ताल देखने को मिली। विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशीलता और अनुभव के आधार पर ऐसे प्रसंगों को कथा का रूप दिया, जो सामान्य जीवन में हमारे आसपास घटित होते रहते हैं, लेकिन प्रायः उन पर हमारा ध्यान नहीं जाता।प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों को यह अवसर मिला कि वे केवल पाठ्यक्रम की निर्धारित सामग्री तक सीमित न रहते हुए स्वयं भी रचना करें और अपनी भाषा तथा अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करें। इस प्रकार की गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने के साथ–साथ उन्हें साहित्य की सृजनात्मक दुनिया से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता ने उत्साह वर्धन किया।

प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिली। विद्यार्थियों ने पूरे मनोयोग से अपनी लघुकथाओं का लेखन किया। उनके बीच लेखन को लेकर उत्साह और स्वस्थ रचनात्मक प्रतिस्पर्धा का वातावरण रहा। प्रतियोगिता ने विद्यार्थियों को एक–दूसरे की रचनात्मक क्षमताओं से परिचित होने तथा साहित्यिक अभिरुचियों को साझा करने का अवसर भी दिया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को यह संदेश दिया गया कि साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और जीवन को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। लेखन व्यक्ति को अपने आसपास की दुनिया को नए दृष्टिकोण से देखने की दृष्टि प्रदान करता है। विशेष रूप से लघुकथा जैसी विधा विद्यार्थियों को कम शब्दों में प्रभावी और सार्थक अभिव्यक्ति का अभ्यास कराती है।कार्यक्रम का कुशल संचालन किसलय सिंह ने किया। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागियों एवं उपस्थित विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। उनके संचालन से कार्यक्रम सुव्यवस्थित एवं प्रभावपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ।

प्रतियोगिता के दौरान विभाग के शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और उन्हें रचनात्मक लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। आयोजन के माध्यम से विद्यार्थियों को यह अनुभव भी प्राप्त हुआ कि साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी उनके व्यक्तित्व एवं अकादमिक विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कार्यक्रम के अंत में कोमल यादव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने विभागाध्यक्ष, आयोजन से जुड़े सभी शिक्षकों, शोधार्थियों, प्रतिभागी विद्यार्थियों तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी ने प्रतियोगिता को सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिक्षक एवं शोधार्थियों की रही उपस्थिति

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों का उत्साहवर्धन किया। उनकी उपस्थिति से विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ा।

नदी विशेषज्ञ समाज शेखर को बी एच यू के आई आई टी में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रण'

27 सितम्बर को राष्ट्रीय नदी दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में नदी पुनर्जीवन पर देंगे व्याख्यान, भयहरणनाथ धाम व बकुलाही क्षेत्र के लिए गौरव का क्षण

प्रतापगढ़। प्रयागराज–प्रतापगढ़ के जन–मन में ष्बकुलाही पुत्रष के नाम से प्रसिद्ध नदी विशेषज्ञ समाज शेखर जी को विश्व नदी दिवस पर 27 सितम्बर को प्प्ज ठभ्न् वाराणसी में आयोजित सम्मेलन में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। समाज शेखर इस अवसर पर छोटी नदियों के पुनर्जीवन में स्थानीय समाज की भूमिका तथा बेहतर भविष्य पर अपना व्याख्यान देंगे।

यह कार्यक्रम ैने जंपदंइपसपजल क्मअमसवचउमदज ब्मदजतम (ैक्ब्), सिविल इंजीनियरिंग विभाग, प्प्ज ठभ्न् एवं गंगा समग्र, काशी प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में देववर्धन लेक्चर हॉल कॉम्प्लेक्स, प्प्ज ठभ्न् वाराणसी में आयोजित होगा। इस वर्ष का विषय –ष्सतत भविष्य हेतु क्षेत्रीय नदियों से जुड़ावष– है। यह आमंत्रण समाज शेखर को प्प्ज के प्रो. प्रभात कुमार सिंह, कार्यक्रम संयोजक द्वारा दिया गया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. राज भूषण चौधरी जी, जल शक्ति राज्य मंत्री, भारत सरकार एवं मुख्य वक्ता अमरेन्द्र प्रसाद सिंह जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, गंगा समग्र होंगे। कार्यक्रम में दो महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी कृ पहला क्षेत्र में नदियाँ और कृषि उत्पादकता तथा दूसरा क्षेत्रीय नदियों के पुनरुद्धार के लिए सरकार की नई पहल।

उन्होंने अवगत कराया है कि इस अवसर पर प्रदेश के कई जिलों– अयोध्या, आजमगढ़, अम्बेडकरनगर,

बलिया, बस्ती, गाजीपुर, गोरखपुर, गोंडा, महाराजगंज, मऊ, मिर्जापुर, सोनभद्र, सुल्तानपुर, सिद्धार्थनगर के जिला परियोजना अधिकारियों (क्च्वे) को भी आमंत्रित किया गया है। उल्लेखनीय है कि समाज शेखर जी ने बकुलाही, सई, लोनी, ज्वालामुखी, मोक्षदा, वरुणा, काथा सहित प्रतापगढ़–प्रयागराज अंचल की अनेक छोटी नदियों के उद्गम से लेकर संगम तक की पदयात्रा, वैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं जन–जागरूकता अभियान व जल जन विकास अभियान चलाया है। उनके प्रयासों से भयहरणनाथ धाम स्थित बकुलाही नदी के पुनर्जीवन की दिशा में ठोस पहल हुई है। रामायण वर्णित वारुठी व प्राचीन असि नदी के पुनर्जीवन को लेकर विशेष अध्ययन, मान्यता व स्थलीय अवलोकन का प्रयास निरंतर जारी है। भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान एवं बकुलाही पुनरोद्धार अभियान सहित सभी सामाजिक साथी व कार्यकर्ताओं ने इस आमंत्रण को पूरे क्षेत्र के लिए गौरव बताते हुए हर्ष व्यक्त किया है।

गेंदा और गुलाब

गेंदा और गुलाब का, समझो लब्बे लुआब।
पंखुड़ियाँ जिसकी बनी, खुशबूमयी किताब।
खूशबूमयी किताब, बात गहरी सिखलाती।
सबको दें मुस्कान, अन्त तक हैं समझाती।
सुन लो कहें प्रदीप, कहे फूलों का खेला।
मधुरम प्यारी बात, बताता प्यारा गेंदा।।

शोभा बन उद्यान का, देते हैं जो ज्ञान।
फूल उसे दुनिया कहे, है हरि का वरदान।
है हरि का वरदान, बताकर सबको गेंदा।
सजा रहा घरबार, हर्ष का बनकर मेला।
सुन लो कहें प्रदीप, जगत का कोना–कोना।
महकाते हैं फूल, घरों की बनकर शोभा।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

सी.एम.पी. डिग्री कालेज में 'दीक्षारम्भ' सह अभिमुखीकरण कार्यक्रम का शुभारम्भ

प्रयागराज। सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, प्रयागराज के विधि विभाग एवं विधिक सहायता एवं सेवा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में नवप्रवेशित एल.एल.बी. प्रथम सेमेस्टर, शैक्षणिक सत्र 2026दृ 27 के विद्यार्थियों के लिए पाँच दिवसीय "दीक्षारम्भ" सह अभिमुखीकरण कार्यक्रम (क्मर्मोींतंउइी बनउ व्तपमदजंजपवद च्तवहतंउउम) का मंगलवार को विधि विभाग के कक्ष संख्यादृ 1 में शुभारम्भ हुआ।

कार्यक्रम के प्रथम दिन मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. रुचिता चक्रवर्ती, सहायक आचार्य, ब्ंउचने स्ं ब्मदजतम, न्दपअमतेपजल वर्िं क्मसीप ने "ब्वदेजपजनजपवदंस त्पहीजे ंदक ।बबमे जव श्रनेजपबम" विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने संविधान प्रदत्त अधिकारों, विधि के शासन (त्नसम वर्िं), न्याय तक समान पहुँच तथा विधि विद्यार्थियों की सामाजिक एवं व्यावसायिक जिम्मेदारियों के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को विधि शिक्षा को केवल डिग्री अथवा व्यवसाय तक सीमित न रखकर उसे न्याय, समानता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर देखने के लिए प्रेरित

किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में कॉलेज की महत्वपूर्ण समितियों से नवप्रवेशित विद्यार्थियों का परिचय कराया गया। प्रॉक्टोरियल बोर्ड के सदस्य डॉ अमित मिश्रा ने छात्र अनुशासन, परिसर आचरण, पहचान एवं जिम्मेदार छात्र जीवन के संबंध में जानकारी दी। इसके पश्चात एंटी–रैगिंग सेल के सदस्य डॉ पूर्णेंदु मिश्रा ने रैगिंग निषेध, शिकायत की प्रक्रिया तथा संस्थान की शून्य–सहनशीलता नीति से विद्यार्थियों को अवगत कराया। स्टूडेंट ग्रीवांस रिड्रेसल सेल की सदस्य डॉ रितु रघुवंशी ने विद्यार्थियों की शिकायतों के निवारण हेतु उपलब्ध संस्थागत तंत्र तथा सहायता के माध्यमों की जानकारी दी। अंत में विद्यार्थियों के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं पर संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए प्रो. शिव शंकर सिंह, संयोजक, विधि विभाग ने कहा कि "दीक्षारम्भ" विद्यार्थियों की विधि शिक्षा की औपचारिक शुरुआत भर नहीं, बल्कि उन्हें विभाग की शैक्षणिक संस्कृति, अनुशासन, संस्थागत व्यवस्था और पेशेवर उत्तरदायित्व से परिचित कराने का माध्यम है। डॉ. रमेश कुमार भारती, संयोजक, विधिक सहायता एवं सेवा केंद्र ने कहा कि विधि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थियों में केवल विधिक ज्ञान विकसित करना नहीं, बल्कि उनमें न्यायबोध, संवैधानिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता और विधिक सेवा की भावना विकसित करना भी है। उन्होंने बताया कि पाँच दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिदिन एक बाह्य विधि विशेषज्ञ का अकादमिक व्याख्यान तथा कॉलेज की तीन महत्वपूर्ण समितियों के संयोजकों द्वारा विद्यार्थियों के लिए संक्षिप्त अभिमुखीकरण सत्र आयोजित किए जाएंगे। यह कार्यक्रम 22 से 28 सितम्बर 2026 तक पाँच कार्य दिवसों में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य नवप्रवेशित विद्यार्थियों को विधि शिक्षा, कॉलेज की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था, छात्र कल्याण तंत्र, विभिन्न समितियों तथा उपलब्ध सहायक सुविधाओं से सुव्यवस्थित रूप से परिचित कराना है। कार्यक्रम का संचालन अपूर्वा सिंह ने किया तथा विशेष सहयोग उत्कर्ष यादव और रिया सिंह का रहा। कार्यक्रम में विधि विभाग के शिक्षकगण प्रोफेसर अजय प्रताप सिंह, डॉ ब्रह्म देव पांडेय, डॉ रमेश कुमार सिंह, डॉ रमेश कुमार सिंह, डॉ अजय कुमार, डॉ राकेश कुमार गौतम, डॉ पद्मा अपराजिता परिजा, डॉ सोनल खरे, डॉ अशोक कुमार, डॉ रजनीश्वर दत्त किशोर, डॉ तुषार श्रीवास्तव , डॉ अंजलिका, डॉ नंदिनी रायजादा, डॉ गौरव पटेल, डॉ सत्यवान कुमार नायक और विधिक सहायता एवं सेवा केंद्र के स्वयंसेवक तथा बड़ी संख्या में नवप्रवेशित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

त्रिधारा अंतर्राष्ट्रीय कला कार्यशाला में सम्मानित हुए कलाकार

सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज के निदेशक डश्व सुदेश शर्मा को मिला स्वर्गीय अन्नपूर्णा देवी स्मृति अंतर्राष्ट्रीय कला सम्मान

प्रयागराज। ललिता ट्रस्ट गोरखपुर और राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिधारा अंतर्राष्ट्रीय कला कार्यशाला के तीसरे दिन राष्ट्रीय– अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकार सम्मानित हुए। इस आयोजन के मुख्य अभ्यागत उत्तर प्रदेश व्यापारी कल्याण बोर्ड के उपाध्यक्ष पुष्प दत्त जैन एवं संस्कृति कर्मी–समाजसेवी अचिंत्य लाहिरी थे। कार्यक्रम में पहली बार स्वर्गीया अन्नपूर्णा देवी स्मृति अंतर्राष्ट्रीय कला सम्मान – 2026 उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र प्रयागराज के निदेशक सुदेश शर्मा को डॉ रोली बिंदल लाठ एवं ललिता ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ भारत भूषण द्वारा प्रदान किया गया। सुदेश शर्मा की अनुपस्थिति में यह सम्मान, मोमेंटो और धनराशि का चेक और अंगवस्त्र उनके प्रतिनिधि नारायण आर्ट अकादमी के डायरेक्टर डॉ रवीन्द्र कुशवाहा को दिया गया ।उसके बाद प्रख्यात कवयित्री एवं समाज सेविका सुधा मोदी, प्रख्यात रेडियोलॉजिस्ट एवं संस्कृति कर्मी डॉ वी.के.सिंह , प्रसिद्ध समाज सेविका एवं चित्रकार डॉ रोली बिंदल लाठ, श्रीलंका के कलाकार कोपाला पिल्लई माथिसकुमार , सुथर्शन, जगदीश कुमार, श्रीसांथन , प्रख्यात कीट वैज्ञानिक एवं प्रसिद्ध रंगकर्मी डॉ.राधे कृष्ण त्रिपाठी , बड़ौदा के अंतर्राष्ट्रीय चित्रकार अजीत वर्मा, देवास मध्य प्रदेश के चित्रकार मनोज पवार , हंपी कर्नाटक के अंतरराष्ट्रीय चित्रकार डॉ एम.सी.बागोड़ी, प्रयागराज के प्रख्यात कवि एवं चित्रकार डॉ रवीन्द्र कुशवाहा, गोरखपुर की चित्रकार डॉ सुदीप्ता बी.भूषण , अनीता श्रीवास्तव ,नंदलाल प्रसाद ,आजमगढ़ के प्रसिद्ध चित्रकार रविंद्र कुमार, वाराणसी की चित्रकार ज्योति , जयपुर के प्रसिद्ध चित्रकार आदित्य भूषण, चंडीगढ़ के प्रसिद्ध चित्रकार अजय तंवर और कार्यशाला में सबसे कम उम्र के (4 वर्ष के) चित्रकार सारांश शिवानील को मुख्य अभ्यागतों ने मोमेंटो एवं उत्तरीय देकर सम्मानित किया। प्रख्यात चित्रकार डॉ.भारत भूषण को नारायण आर्ट अकादमी प्रयागराज के डायरेक्टर रवीन्द्र कुशवाहा द्वारा विश्व कला रत्न सम्मान प्रदान किया गया । इस उपलक्ष्य में एक अंतर्राष्ट्रीय कैटलॉग बुक और प्रशस्ति पत्र दिया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन मनोज कुमार श्रीवास्तव ने किया। सम्मान समारोह में सुधा मोदी, डॉ रोली बिंदल लाठ , अचिंत्य लाहिरी, डिप्टी चीफ सिक्योरिटी कमिश्नर सुभाष चौधरी ने उद्बोधन दिया। कार्यक्रम के आयोजन में सुशील कुमार श्रीवास्तव का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान था। सम्मान समारोह के अंत में सभी आगंतुकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन वीरेंद्र गुप्ता ने किया।

सम्पादकीय........

असुविधाओं की रेल

वैसे तो दावे किए जाते रहे हैं कि भारतीय रेलवे को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाया जा रहा है, लेकिन हकीकत निराश करने वाली है। विडंबना यह है कि तमाम मुश्किलों में सफर करने वाला यात्री शिकायत दर्ज कराने के बजाय अपने गंतव्य स्थान पर पहले पहुंचना चाहता है। जिसके चलते सभी खामियों के साथ भारतीय रेल ढर्रे पर ही चल रही है। पिछले महीने संसद में पेश कैग की रिपोर्ट में सैकड़ों रेलवे स्टेशनों में पेयजल व अन्य मूलभूत सुविधाओं की कमी का उल्लेख किया गया था। यहां तक कि पेयजल में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले जीवाणु पाये जाने की बात कही गई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि 89 फीसदी स्टेशनों में बैठने की पर्याप्त जगह, पंखे, मार्गदर्शन करने वाले चिन्हों तथा शौचालय आदि बुनियादी सुविधाओं की कमी थी। कैग की रिपोर्ट की पुष्टि करती हुई लोक लेखा समिति ने भी अपनी पड़ताल में कई स्टेशनों में पेयजल, पंखे, बैठने के सुविधाजनक स्थान आदि पर्याप्त मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध न होने की बात कही है। समिति ने रेलवे अधिकारियों से जवाब मांगा है। यूं तो देश के कई रेलवे स्टेशनों को सजाने–संवारने का काम जरूर हुआ है, लेकिन कई स्थानों पर निर्धारित समय पूरा होने के बावजूद निर्माण कार्य अधूरा है। जिससे यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। क्या देश में कोई ऐसा नियामक तंत्र नहीं जो निर्माण कार्य करवाने वाली कंपनी के विरुद्ध कार्रवाई कर सके? आधे–अधूरे निर्माण कार्य की गफलत में दुर्घटना होने की आशंका बनी रहती है। यूं तो भारतीय रेलवे दुनिया का चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क है। लेकिन सुविधाओं के नाम पर हम कहां टिकते हैं? पेयजल जैसी मूलभूत सुविधा के अभाव में यात्री ट्रेन के रुकने पर उतरकर स्टेशन पर भटकते नजर आते हैं। दुकानदार भी बोतलबंद पानी बेचने के लिये पेयजल व्यवस्था को बाधित करने का प्रयास करते देखे जाते हैं। किसी ट्रेन के जनरल डिब्बे में भेड़–बकरियों की तरह भरे यात्री कैसे सफर पूरा करते होंगे, अनुमान लगाना कठिन नहीं है। ट्रेन के भीतर शौचालयों की बुरी स्थिति देखकर यात्री मन मारकर उनका प्रयोग करते हैं। निश्चय ही रेलवे की निगरानी व्यवस्था खासी लचर है। ऐसा लगता है कि किसी की जवाबदेही ही तय नहीं हुई। वहीं बड़ी संख्या में यात्री भी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करते। यहां–वहां बिखरा कूड़ा इसकी गवाही देता है। हमारे समाज में उस स्वच्छता चेतना का विकास नहीं हो पाया है, जो आजादी के आठवें दशक में हो जानी चाहिए थी। आखिर हम कब एक जिम्मेदार नागरिक की तरह रेलवे स्टेशनों व रेल के डिब्बों के भीतर साफ–सफाई रखना अपना कर्तव्य मानेंगे। लेकिन इसके बावजूद रेलवे को एक ऐसा जवाबदेह तंत्र विकसित करना होगा जो यात्रियों को बुनियादी सुविधा उपलब्ध करा सके। दरअसल, रेल मंत्रालय हासिल करने और अपने चुनावी क्षेत्र के लोगों को रेलवे में भर्ती करने को लेकर दशकों तक जो राजनीति चलती रही है, उसने भी किसी हद तक रेलवे व्यवस्था की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। बहरहाल, अब यह तसवीर बदलनी चाहिए।

हर देश के लिए जरूरी है शांति मंत्रालय

डॉ. दीपक पाचपोर

गाजा में मानवीय संकट गहराता जा रहा है। पश्चिम एशिया, अफ्रीका के अनेक गृहयुद्ध और एशिया में बढ़ते सामरिक तनाव बताते हैं कि आधुनिक विश्व अभी भी हथियारों के भरोसे सुरक्षा खोज रहा है।

कुमार सिद्धार्थ

हर वर्ष 21 सितंबर को दुनिया अंतरराष्ट्रीय शांति दिवसश मनाती है। संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) ने 1981 में इसकी शुरुआत इस उद्देश्य से की थी कि विश्व समुदाय युद्ध और हिंसा से ऊपर उठकर शांति, संवाद और सह–अस्तित्व की संस्कृति को मजबूत करे। वर्ष 2001 में यूएन ने सर्वसम्मति से इस दिन को वैश्विक संघर्ष–विराम और अहिंसा दिवस के रूप में भी मान्यता दी, लेकिन दुर्भाग्या से जिस दुनिया में शांति के नाम पर एक दिन समर्पित है, उसी दुनिया में वर्ष के शेष दिनों में युद्धों की तैयारी अधिक व्यवस्थित ढंग से होती दिखती है। बीसवीं सदी के दो विश्वयुद्धों और हिरोशिमा–नागासाकी की त्रासदी ने मानवता को विश्वास दिलाया था कि शायद अब युद्ध इतिहास की बात बन जाएंगे, किंतु इक्कीसवीं सदी में ऐसा नहीं हुआ। रूस–यूक्रेन युद्ध तीसरे वर्ष में है। गाजा में मानवीय संकट गहराता जा रहा है। पश्चिम एशिया, अफ्रीका के अनेक गृहयुद्ध और एशिया में बढ़ते सामरिक तनाव बताते हैं कि आधुनिक विश्व अभी भी हथियारों के भरोसे सुरक्षा खोज रहा है। परमाणु हथियारों का जखीरा आज भी हजारों की संख्या में मौजूद है और वैश्विक सैन्य बजट लगातार बढ़ रहे हैं। तो क्या हथियारों की बढ़ती संख्या दुनिया को अधिक सुरक्षित बना रही है? गांधीवादी चिंतक और लेखक सतीश कुमार ने इसी प्रश्न को नए दृष्टिकोण से उठाया है। अपने एक लेख में उन्होंने कहा है कि जिस प्रकार लगभग हर देश में रक्षा मंत्रालय हैं, उसी प्रकार प्रत्येक देश में शांति मंत्रालय भी होना चाहिए। ऐसा मंत्रालय समाज में संवाद, मध्यस्थता, शांति शिक्षा, अहिंसक प्रतिरोध, सामुदायिक मेल–मिलाप और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने का काम कर सकता है। यदि सरकारें युद्ध की तैयारी के लिए विशाल संस्थागत ढांचे विकसित कर सकती हैं, तो शांति की तैयारी के लिए भी संस्थागत व्यवस्था बनाई जानी चाहिए। पहली दृष्टि में यह विचार आदर्शवादी लग सकता है, लेकिन वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में इसकी प्रासंगिकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दुनिया के लगभग सभी देशों के पास रक्षा मंत्रालय, सेनाएं, युद्ध रणनीतियां और हथियारों के आधुनिकीकरण की योजनाएं हैं, किंतु शायद ही कोई ऐसा देश हो जहां संवाद, मेल–मिलाप, संघर्ष–निवारण और शांति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अलग मंत्रालय हो। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार वर्ष 2024 में दुनिया का सैन्य व्यय लगभग 2.7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया था, जो अब तक का सर्वाधिक है। यह लगातार दसवां वर्ष था, जब वैश्विक रक्षा व्यय में वृद्धि दर्ज की गई। अमेरिका, चीन, रूस, जर्मनी और भारत सबसे अधिक रक्षा व्यय करने वाले देशों में शामिल हैं। इसके विपरीत यूएन की अनेक मानवीय और शांति–स्थापना एजेंसियां संसाधनों की कमी से जूझती रहती हैं। यह विरोधाभास बताता है कि विश्व राजनीति की प्राथमिकताएं किस दिशा में झुकी हुई हैं। युद्ध की सबसे बड़ी कीमत सैनिकों से अधिक राष्ट्र के आम नागरिक चुकाते हैं। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) के अनुसार दुनिया में 12 करोड़ से अधिक लोग युद्ध, हिंसा और उत्पीड़न के कारण अपने घर छोड़ने को विवश हैं। गाजा, यूक्रेन और सूडान जैसे क्षेत्रों में स्कूल, अस्पताल और नागरिक बस्तियां नष्ट हुई हैं। लाखों बच्चे शिक्षा से वंचित हुए हैं और असंख्य परिवार विस्थापन का जीवन जी रहे हैं। आधुनिक युद्ध केवल सीमाओं को नहीं, बल्कि समाजों के विश्वास, मानवीय गरिमा और भविष्य को भी समाप्त करते हैं। युद्ध का एक और गंभीर पक्ष पर्यावरणीय विनाश है। आधुनिक सेनाएं भारी मात्रा में जीवाश्म ईंधन का उपयोग करती हैं। बमबारी से जंगल, कृषि भूमि और जलस्रोत नष्ट होते हैं। औद्योगिक प्रतिष्ठानों के ध्वस्त होने से विषैले रसायन वातावरण में फैलते हैं और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है। सतीश कुमार का प्रस्ताव है कि रक्षा बजट का एक हिस्सा शांति निर्माण के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए। शांति मंत्रालय का कार्य केवल युद्ध रोकना नहीं, बल्कि शांति शिक्षा, संवाद, मध्यस्थता, सामुदायिक मेल–मिलाप, अहिंसक प्रतिरोध, संघर्ष–निवारण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना होगा। दरअसल, शांति को संस्थागत रूप देने का विचार नया नहीं है। महात्मा गांधी का मानना था कि हिंसा अंततरू प्रतिहिंसा को जन्म देती है। स्वतंत्रता आंदोलन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां करोड़ों लोगों ने बिना हथियार एक साम्राज्य को चुनौती दी। गांधी का स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं थाय वह ऐसे समाज की परिकल्पना थी जहां संघर्षों का समाधान संवाद और नैतिक शक्ति से हो। गांधी की इसी परंपरा को विनोबा भावे, दादा धर्माधिकारी, जयप्रकाश नारायण और नारायण देसाई जैसे अनेक विचारकों ने आगे बढ़ाया और समाज में संवाद, रचनात्मक कार्यक्रमों और अहिंसक संघर्षों को लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति माना। इन सभी का विश्वास था कि स्थायी सुरक्षा हथियारों से नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण समाज, लोकतांत्रिक भागीदारी और अहिंसक संस्कृति से आती है। इस दृष्टि से शांति मंत्रालय का प्रस्ताव गांधीवादी चिंतन का समकालीन संस्थागत विस्तार प्रतीत होता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन और दार्शनिक बर्ट्रेंड रसेल ने भी मानवता को यही चेतावनी दी थी। 1955 के प्रसिद्ध रसेल–आइंस्टीन घोषणापत्र में उन्होंने विश्व नेताओं से आग्रह किया था कि वे युद्ध की बजाय मानव अस्तित्व को प्राथमिकता दें।

राहुल मेहनत कर रहे हैं और कांग्रेसी उस पर पानी फेर रहे

शकील अख्तर

कांग्रेसी चाहते हैं राहुल चक्रव्यूह तोड़ दें। राहुल तोड़ सकते हैं। मगर राहुल उसे तोड़कर बाहर निकलना भी चाहते हैं। कांग्रेसियों को इसमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं है कि राहुल चक्रव्यूह तोड़कर बाहर आएं। उन्हें केवल राहुल से चक्रव्यूह तुड़वाना है। क्योंकि उनमें से न तो कोई तोड़ सकता है न तोड़ना चाहता है। राहुल को आप चाहे जितना अव्यवहारिक या आदर्शवादी कहें मगर इतना वह जानते हैं कि आज के समय केवल चक्रव्यूह तोड़ना ही महत्वपूर्ण नहीं है। तोड़कर बाहर निकलना भी है। लोकसभा में विपक्ष के नेता बनने के बाद राहुल ने यह बात कही थी। उन्होंने कहा था कि जो कौरवों ने अभिमन्यु के साथ किया था वही अब मोदी सरकार कर रही है। महाभारत में कौरव कामयाब हुए थे। अभिमन्यु को घेर कर मार लिया था। लेकिन अब अभिमन्यु मरेगा नहीं। चक्रव्यूह बेधेगा और बाहर भी आएगा। राहुल ने यह बिल्कुल नया कान्सेप्ट दिया है। इससे पहले चक्रव्यूह बेधने की ही बात होती थी। मगर राहुल ने आज के समय के अनुसार उससे सुरक्षित बाहर निकलने की जो बात कही है वह एक आशावादी राजनीति का मैसेज है। और 12 साल से निराश एवं हताश जनता को इससे एक उम्मीद बंधती है। राहुल जनता में ही हौसला पैदा करके और खास तौर से छात्र एवं युवाओं को जगाकर ही इस चक्रव्यूह को तोड़ने और इससे बाहर निकलने की बात करते हैं। राहुल के छात्रों के गूंज कार्यक्रम की अब चौतरफा चर्चा है। छात्रों से कोई पंगा नहीं ले सकता। इसलिए न चाहते हुए भी गोदी मीडिया को छात्रों की आवाज दिखाना पड़ रही है। गोदी मीडिया देख चुका है कि छात्रों की बात न सुनने का खामियाजा मोदी सरकार को किस तरह उठाना पड़ा है। उसके शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा। और प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह संसद के दोनों सदनों में से किसी एक में भी नहीं आ पाए। लेकिन कांग्रेस के ही कुछ नेताओं की गलतियों के कारण कई बार बेवजह बाजी पलट जाती है। जिस दिन राहुल का अब तक का सबसे सफल गूंज कार्यक्रम इन्दौर में हो रहा था उसी दिन दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनावों का नतीजा निकल रहा था। दिल्ली में इस बार जो माहौल था भाजपा उससे बहुत डरी हुई थी। हर चीज उसके खिलाफ जा रही थी। और ऐसे में दिल्ली यूनिवर्सिटी के चुनाव से एक हफ्ते पहले सत्य निकेतन की बिल्डिंग गिर जाने जिसमें दिल्ली यूनिवर्सिटी के ही पढ़ने वाले कई छात्र दबकर मर जाने की घटना ने उसे पूरी तरह निराश कर दिया था। लेकिन अगर बल्लेबाज ही हिट विकेट हो जाएं तो कितने ही निराश बालर और टीम हो जीत जाती है। दिल्ली का हर चुनाव पूरे देश को संदेश देता है। चाहे लोकसभा हो या दिल्ली विश्वविद्यालय का चुनाव। यहां केवल छात्र संघ का चुनाव ही नहीं दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ डूटा भी राजनीति की नब्ज बताता है। अभी छात्र संघ डूसू चुनाव के चार दिन पहले ही दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे प्रभावी शिक्षक नेता माने जाने वाले और तीन बार डूटा के अध्यक्ष रहने वाले आदित्य नारायण मिश्रा ने बड़ी तादाद में युनिवर्सिटी के शिक्षकों के साथ कांग्रेस मुख्यालय आकर कांग्रेस ज्वाइन की। इसका डूसू चुनाव पर स्वाभाविक असर पड़ना था। उससे पहले दिल्ली के जंतर मंतर पर ही छात्रों का बड़ा धरना और फिर संसद मार्च में लाठी, आंसू गैस, पैलेट गन चलने से पूरा माहौल भाजपा विरोधी बना हुआ था। छात्र राजनीति के लिए इससे अनुकूल माहौल कुछ नहीं हो सकता। मगर एक नेता द्वारा अपने बेटे को टिकट दिलाकर एनएसयूआई का पूरा पैनल लंगड़ा कर दिया गया। जिस उपाध्यक्ष सीट पर उस नेता के बेटे वीर चतरथ को लड़ाया वहां एनएसयूआई को नोटा से भी कम वोट मिले।

लोककथाओं में बालमन और कल्पना

अंजलि श्रीवास्तव
प्रयागराज

लोककथाओं के विविध पक्षों पर विचार करते हुए यह अनुभव होता है कि बालमन और कल्पना का संसार इन कथाओं में अत्यंत जीवंत और सक्रिय रूप में उपस्थित है।

लोककथाएं बालमन के निर्माण, उसकी जिज्ञासा संवेदना और कल्पनाशीलता को दिशा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा से संचित ये कथाएं बच्चों के भीतर एक ऐसा संसार रचती हैं जहां वास्तविकता और कल्पना का सुंदर संगम दिखाई देता है। वह हर वस्तु में नई कहानी खोज लेता है। और हर कथा को अपने भीतर जीता है। लोककथाएं इसी प्रवृत्ति को पोषित करती हैं। जब कोई बच्चा लोककथा सुनता है। तो वह केवल श्रोता नहीं रहता, बल्कि कथा का सहभागी बन जाता है। वह कभी नायक के साहस में स्वयं को देखता है, तो कभी छोटे पात्र की बुद्धिमत्ता में अपनी छवि पाता है।

इस प्रकार लोककथाएं बालमन के सक्रिय अनुभव का अवसर देती है।

सहज और सरल चित्रात्मक शैली में कही गई यह कथाएं बालमन को सहज ही आकर्षित करती है । इसमें जादू –टोने चमत्कार, पशु– पक्षियों का मानवीकरण और असंभव को संभव बना देने वाली घटनाएं होती हैं, जो बालमन की कल्पना को विस्तार देती हैं।

लोककथाएं बालमन की कल्पना को ही केवल उड़ान नहीं देती है बल्कि उसे जीवन के मूल्यों से भी परिचित कराती हैं।

उदाहरण के रूप में, पंचतंत्र की कथाओं में पशु– पक्षियों के माध्यम से बालमन को सरल और रोचक ढंग से जीवन की सीख दी जाती है।

वही अकबर –बीरबल की कहानियां उसकी बुद्धि चतुराई और त्वरित निर्णय क्षमता को विकसित करती हैंस

इस प्रकार लोककथाएं मनोरंजन के साथ–साथ बालमन को विचारशील और विवेकपूर्ण बनाती हैं।

बालमन की संवेदनशीलता को विकसित करने में भी लोककथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चा कथा के पात्रों के साथ हंसता है, रोता है और उनके अनुभवों से जुड़ता है। इस प्रक्रिया में उसमें सहानुभूति करुणा संवेदना के भाव विकसित होते हैं। यही संवेदनशीलता आगे चलकर उसके व्यक्तित्व का आधार बनती है।

इसके अतिरिक्त लोककथाएं बालमन को स्वतंत्र सोचने की प्रेरणा देती हैं। वह उसे विश्वास दिलाती है कि सीमित साधनों के बावजूद साहस बुद्धि और धैर्य के बल पर कठिन परिस्थितियों को बदला जा सकता है। छोटे से पात्र का, बड़े संकट पर विजय प्राप्त करना बाल मन में आत्मविश्वास पैदा करता है। इस प्रकार लोककथाएं उसके भीतर संघर्ष की सकारात्मक भावना को जन्म देती हैं।

आधुनिक समय में जब बच्चों का जीवन तकनीकी साधनों के बीच सीमित होता जा रहा तो लोककथाओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह कथाएं उन्हें न केवल उनकी संस्कृति से जोड़ती हैं बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक विकास को संतुलित बनाती हैं।

अंततः कहां जा सकता है कि लोककथाएं बालमन और कल्पना के बीच एक सशक्त सेतु है। वे बालमन की सरलता को संरक्षित रखते हुए कल्पना को नई दिशाएं देती है। लोककथा के माध्यम से बालमन न केवल एक कथा सुनता है बल्कि वह जीवन को समझने महसूस करने की प्रक्रिया में प्रवेश करता है यही कारण है कि लोककथाएं समय के साथ अपनी प्रासंगिकता बनाए रखती हैं और बालमन के विकास में अपनी भूमिका निभाती।

'घुसपैठियों' को मनमाने तरीके से तीसरे देशों में खदेड़ रहे हैं ट्रंप

नीरज कुमार दुबे

अमेरिका अब किसी विदेशी नागरिक को अपने देश से बाहर निकालने के लिए उसके मूल देश के दरवाजे पर दस्तक देने और वहां से हरी झंडी मिलने का इंतजार नहीं करता। ट्रंप प्रशासन ने निर्वासन की पूरी परिभाषा ही बदल दी है। जिस व्यक्ति को अमेरिका से बाहर करना है, उसका देश उसे वापस लेगा या नहीं, इस बात पर अब अमेरिका माथापच्ची करने में समय नहीं गंवाता। अमेरिका अब खुद उसके लिए कोई तीसरा ठिकाना तलाश रहा है और उसे वहां पहुंचाने के लिए अपनी तिजोरी से धन खर्च कर रहा है। यानी जिस व्यक्ति को अमेरिका नहीं रखना चाहता, उसे उसके अपने देश में भेजने की बजाय किसी ऐसे देश में धकेला जा रहा है, जिससे उसका कोई नाता तक नहीं है। इस पूरी कवायद में अमेरिका उन देशों को पैसा भी दे रहा है, ताकि वे इन लोगों को अपने यहां रखने के लिए तैयार हो जाएं। यह केवल निर्वासन नहीं, बल्कि अमेरिकी धन, कूटनीतिक दबाव और वैश्विक प्रभाव के सहारे खड़ा किया जा रहा एक ऐसा तंत्र है, जिसमें अमेरिका तय कर रहा है कि उसके यहां से निकाला गया व्यक्ति आखिर दुनिया के किस कोने में पहुंचेगा। देखा जाये तो अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की आव्रजन नीति अब केवल सीमा बंद करने, गिरफ्तारी और निर्वासन तक सीमित नहीं रह गई है। अमेरिकी समाचार पत्र वॉशिंगटन पोस्ट ने अपनी एक पड़ताल में जो खुलासा किया है उससे पूरी दुनिया में हड़कंप मच गया है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिकी विदेश विभाग के जिस तंत्र का मूल काम दुनिया भर से उत्पीड़ित लोगों को शरण और पुनर्वास दिलाना था, उसी को अब दूसरे देशों में लोगों को धकेलने वाली एक विशाल निर्वासन व्यवस्था में बदल दिया गया है। इस पूरी कवायद के लिए कम से कम 410 करोड़ डॉलर की राशि स्वीकृत या प्रतिबद्ध की जा चुकी है और 31 देशों के साथ समझौते किए गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक इस पूरी व्यवस्था के केंद्र में विदेश विभाग के भीतर बनाया गया नया कार्यालय है। इसका नेतृत्व क्रिश्चियन एरहार्ट कर रहे हैं, जो पहले करीब दो दशक तक अमेरिकी दूतावासों की सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े रहे थे। अब वही अधिकारी अफ्रीका और दूसरे क्षेत्रों में घूम–घूमकर सरकारों को ऐसे लोगों को स्वीकार करने के लिए तैयार कर रहे हैं, जिनका उन देशों से कोई संबंध तक नहीं है। रिपोर्ट के मुताबिक क्रिश्चियन एरहार्ट को कई विदेशी सरकारों के सामने सामान्य अधिकारी नहीं, बल्कि सीधे व्हाइट हाउस के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनके पीछे ट्रंप प्रशासन के प्रभावशाली अधिकारी स्टीफन मिलर की निर्णायक भूमिका बताई गई है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि अमेरिका इन देशों को केवल कूटनीतिक दबाव से नहीं मना रहा, बल्कि भारी आर्थिक प्रोत्साहन भी दे रहा है। कम से कम 81 करोड़ डॉलर सीधे 13 विदेशी सरकारों को देने की प्रतिबद्धता सामने आई है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन के लिए 179 करोड़ डॉलर और संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी संस्था के लिए 124 करोड़ डॉलर की राशि का प्रावधान किया गया है। इन संस्थाओं को इन समझौतों का प्रत्यक्ष पक्ष नहीं बताया गया है, लेकिन संबंधित देशों को निर्वासित लोगों को स्वीकार करने के लिए तैयार करने की प्रक्रिया में इन पैसों को प्रोत्साहन के रूप में इस्तेमाल किए जाने की बात सामने आई है। यानी तस्वीर बेहद साफ है। जिस व्यवस्था में कभी अमेरिका दूसरे देशों से भागकर आए लोगों को सुरक्षित जीवन देने के लिए धन लगाता था, अब उसी धन का इस्तेमाल ऐसे देशों को तैयार करने में हो रहा है जो अमेरिका से निकाले गए लोगों को अपने यहां रखने के लिए राजी हों। ट्रंप प्रशासन ने शरणार्थी पुनर्वास की पुरानी दिशा को पलटकर उसे निर्वासन केंद्रित बना दिया है। प्रशासन के अपने एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्वीकार किया है कि संबंधित विभाग की दिशा पूरी तरह बदल दी गई है। बताया जा रहा है कि कोस्टा रिका भेजी गई उड़ानों में चीन, रूस, ईरान और अफगानिस्तान के लोग थे। इस्वातिनी भेजे गए लोगों में वियतनाम, लाओस, क्यूबा और जमैका के नागरिक शामिल थे। युगांडा केवल अफ्रीकी नागरिकों को लेने पर सहमत हुआ, जबकि कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य ने अफ्रीकी नागरिकों को ही स्वीकार करने से इंकार कर दिया। कुछ देश गंभीर अपराधों के आरोपियों को भी लेने के लिए तैयार हैं, जबकि कुछ ने अपराध की प्रकृति के आधार पर सीमाएं तय की हैं। अब तक 25 हजार से अधिक लोगों को कम से कम 28 तीसरे देशों में भेजे जाने का अनुमान है। इनमें करीब 20 हजार लोग मेक्सिको भेजे गए। बाकी लोगों को मुख्यतः अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में धकेला गया। अमेरिकी प्रशासन का तर्क है कि इनमें ऐसे लोग हैं जिनके खिलाफ अंतिम निर्वासन आदेश हैं, लेकिन उनके अपने देश उन्हें वापस लेने से इंकार करते हैं या उन्हें वहां भेजने पर उत्पीड़न का खतरा है। प्रशासन का दावा है कि तीसरे देश का रास्ता ऐसे कठिन मामलों को निपटाने का साधन है। लेकिन यहीं से इस नीति का सबसे गंभीर कानूनी पक्ष शुरू होता है। आलोचकों और आव्रजन वकीलों का आरोप है कि तीसरे देश में भेजकर वहां से संबंधित व्यक्ति को उसके मूल देश में जबरन भेजे जाने का रास्ता बनाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय शरणार्थी कानून में ऐसे स्थान पर भेजना जहां व्यक्ति को उत्पीड़न या यातना का खतरा हो, गंभीर कानूनी सवाल खड़े करता है। गत शुक्रवार को एक संघीय अपीली अदालत ने इस नीति को गैरकानूनी ठहराते हुए कहा कि प्रभावित लोगों को तीसरे देश में भेजे जाने से पहले पर्याप्त सूचना और अपने भय या खतरे से जुड़े दावे रखने का अवसर नहीं दिया गया। हालांकि प्रशासन से इस फैसले को उच्चतम न्यायालय में चुनौती देने की उम्मीद है। दूसरी ओर, पनामा का मामला इस पूरी व्यवस्था की असली तस्वीर दिखाता है। जनवरी 2025 में अमेरिका ने 299 लोगों को पनामा भेजा, जबकि उनका पनामा से कोई संबंध नहीं था। इनमें ईरानी नागरिक अरसलान सालेह फर्द भी थे। उन्हें न स्थायी निवास मिला, न काम करने का अधिकार और न ही अपने भविष्य की कोई स्पष्ट राह। भाषा की समस्या, आर्थिक तंगी और कानूनी अनिश्चितता ने उन्हें ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया जहां वह महीनों तक एक अस्थायी व्यवस्था में फंसे रहे। इस पूरी नीति का सामरिक महत्व केवल आव्रजन तक सीमित नहीं है। दरअसल, अमेरिका अब निर्वासन को विदेश नीति के एक औजार में बदलता दिखाई दे रहा है। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कमजोर या आर्थिक रूप से निर्भर देशों को धन देकर लोगों को स्वीकार कराने से वॉशिंगटन को उन सरकारों पर नया प्रभाव हासिल करने का अवसर मिलता है। लेकिन इससे मानवाधिकारों पर अमेरिकी विश्वसनीयता भी कमजोर पड़ सकती है, क्योंकि जिन देशों में गंभीर मानवाधिकार उल्लंघनों की अमेरिकी रिपोर्टें स्वयं मौजूद हैं, उन्हीं देशों के साथ निर्वासन समझौते किए जा रहे हैं।

हिंदी सिनेमा में पहली बार खूबसूरती से छठ पूजा को दिखाया गया..तमन्ना भाटिया ने द व्वान में छठी मैया गाने की तारीफ की

> “ छठ पूजा आभार का प्रतीक है, यह हमारे पास जो कुछ भी है, उसके लिए शुक्रगुजार होने का प्रतीक है- जिंदगी के उतार-चढ़ाव, सब कुछ मिलाकर और मुझे लगता है कि उन्होंने इसे एक ऐसे गाने में पिरोया है जिसे बहुत प्यार मिला है और जिसके लिए हम बहुत शुक्रगुजार हैं।

एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने आने वाली फिल्म द व्वान के छठ पूजा गाने के बारे में बात करते हुए कहा कि हिंदी सिनेमा में पहली बार इस त्योहार को इतने सम्मान के साथ दिखाया गया है। बाहुबली एक्ट्रेस ने फिल्म बनाने वालों की तारीफ की कि उन्होंने हर छोटी–बड़ी बात का ध्यान रखा और त्योहार को असलियत और संवेदनशीलता के साथ दिखाया। उन्होंने छठ पूजा को आभार का त्योहार बताया और कहा कि छठी मैया गाने को जो प्यार मिला है, उससे वह बहुत खुश हैं। दिल्ली में फिल्म के ट्रेलर लॉन्च इवेंट के दौरान तमन्ना ने कहा, हिंदी सिनेमा में पहली बार छठ पूजा को इस तरह दिखाया गया है। सच कहूं तो, दीपक और अरुणाभ सर इसे बहुत अच्छी तरह समझते हैं और वे इसका बहुत सम्मान करते हैं और इसे बहुत गहराई से महसूस करते हैं। इसलिए शूटिंग के दौरान उन्होंने पक्का किया कि हर चीज का ध्यान रखा जाए और इसे खूबसूरती और बहुत सम्मान के साथ शूट किया जाए। उन्होंने यह भी बताया कि यह त्योहार उनके लिए क्या मायने रखता है और गाने में इसकी भावना और जज्बात को कितनी खूबसूरती से दिखाया गया है। छठ पूजा आभार का प्रतीक है, यह हमारे पास जो कुछ भी है, उसके लिए शुक्रगुजार होने का प्रतीक है–जिंदगी के उतार–चढ़ाव, सब कुछ मिलाकर और मुझे लगता है कि उन्होंने इसे एक ऐसे गाने में पिरोया है जिसे बहुत प्यार मिला है और जिसके लिए हम बहुत शुक्रगुजार हैं। तमन्ना ने उन्हें गाने का हिस्सा बनाने के लिए फिल्म बनाने वालों का भी शुक्रिया अदा किया और कहा, तो, मुझे इसका हिस्सा बनाने के लिए धन्यवाद। सिकंदर का मुकद्दर एक्ट्रेस ने कहा कि छठी मैया गाना लोगों का ध्यान खींच रहा है और सोशल मीडिया पर इसे अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। यह फिल्म हम सभी के लिए बहुत खास है। हमारे देश में बहुत सी लोक कथाएं हैं, और उन्हें बड़े पर्दे पर लाने के लिए बहुत हिम्मत, स्पष्टता और विजन की जरूरत होती है। व्वान सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया का पहला साथ काम करने का प्रोजेक्ट है। फिल्म में मनीष पॉल, श्वेता तिवारी, सुनील ग्रोवर और अनूप सोनी भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। दीपक कुमार मिश्रा द्वारा निर्देशित यह फिल्म बालाजी टेलीफिल्म्स के बैनर तले शोभा कपूर और एकता कपूर द्वारा निर्मित है। व्वान 25 सितंबर को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होगी।

आसिम ऐसी छोटी सोच वाले इंसान नहीं हैं, बेवजह मसाला न लगाएं ... आसिम रियाज और हिमांशी खुराना के धर्म विवाद में बोलें अरहान खान

एक्टर अरहान खान ने बिग बॉस 13 के अपने साथी कंटेस्टेंट आसिम रियाज और हिमांशी खुराना से जुड़े हालिया विवाद पर अपनी राय रखी। आईएएनएस के साथ एक खास बातचीत में, अरहान से उस दावे पर टिप्पणी करने के लिए कहा गया कि आसिम ने अपने रिश्ते के दौरान हिमांशी का धर्म बदलने की कोशिश की थी। अरहान ने आईएएनएस से कहा, मुझे नहीं पता कि किसने किसका धर्म बदलने की कोशिश की क्योंकि मैंने इस बारे में आसिम या हिमांशी से बात नहीं की है। उन्होंने कहा कि यह सही माहौल नहीं है। हमें ऐसी बातों पर चर्चा नहीं करनी चाहिए क्योंकि हमें नहीं पता कि असल में क्या हुआ था। हिमांशी ने पॉडकास्ट पर किसी और संदर्भ में कुछ कहा था, जिसे उन्होंने बाद में स्पष्ट भी किया। मुझे नहीं लगता कि आसिम ऐसी बात कह सकते हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि आसिम ऐसा कुछ कर सकते हैं, तो अरहान ने कहा, ष्मुझे नहीं लगता कि आसिम ऐसा कुछ कर सकते हैं। अगर आप मुझे बताएं कि आसिम ने किसी को थप्पड़ मारा, तो मैं मान लूंगा। अगर आप मुझे बताएं कि आसिम ने किसी के साथ बदतमीजी की, तो मैं मान लूंगा। लेकिन अगर आप मुझे बताएं कि आसिम ने ऐसा कुछ किया, तो इस पर विश्वास करना बहुत मुश्किल है क्योंकि मैं उन्हें जानता हूं, और वह ऐसी छोटी सोच वाले इंसान नहीं हैं। इसलिए, बिना वजह मसाला लगाकर इस बात को न फैलाएं। जो भी यह सब कर रहा है, कृपया इस मामले को खत्म करे। हिमांशी और आसिम बिग बॉस 13 के घर में साथ आए थे। दिसंबर 2023 में अपने ब्रेकअप की घोषणा करने से पहले वे लगभग चार साल तक रिलेशनशिप में रहे। एक पॉडकास्ट के दौरान, हिमांशी ने बताया कि उनके ब्रेकअप में धार्मिक मतभेदों ने बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि आसिम उनसे अपने धर्म की अच्छी बातों के बारे में बात करते थे और चाहते थे कि वह भी उन मान्यताओं को समझें और अपनाएं, जो उन्हें सहज नहीं लगा। आसिम ने उन आरोपों से इनकार किया कि उन्होंने हिमांशी पर धर्म बदलने का दबाव डाला था, और अपने निजी रिश्ते को लेकर हो रही चर्चा की आलोचना की। हालांकि, बाद में हिमांशी ने साफ किया कि उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि उन्हें धर्म बदलने के लिए मजबूर किया गया था, और कहा कि उनकी बातों को गलत तरीके से पेश किया गया।

ऐसी बीमारी में मुझे कोई काम क्यों देगा ? इलाज के बीच छलका दीपिका कक्कड का दर्द, बोलीं–

रोज सेट पर जाकर काम करना मेरे लिए मुमकिन नहीं

ससुराल सिमर का से घर–घर में पहचान बनाने वाली टीवी एक्ट्रेस दीपिका कक्कड़ ने लंबे समय बाद कैमरे के सामने वापसी की है। पिछले करीब डेढ़ साल से कैंसर के इलाज और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना कर रही दीपिका ने हाल ही में अपने एक्टिंग कमबैक को लेकर खुलकर बात की। हालांकि, वापसी के बीच एक्ट्रेस ने यह भी साफ किया कि फिलहाल उनके लिए टीवी सीरियल्स में नियमित रूप से काम करना आसान नहीं है। दीपिका कक्कड़ के फैंस का लंबे समय से चला आ रहा इन्तजार अब खत्म होने वाला है। टीवी की मशहूर सिमर जल्द ही अपने पति शोएब के साथ एक नए म्यूजिक वीडियो में दिखाई देंगी। दीपिका के इस कमबैक की खबर सामने आते ही उनके चाहने वालों के बीच खुशी की लहर दौड़ गई है। फैंस एक्ट्रेस को दोबारा स्क्रीन पर देखने और उनके नए प्रोजेक्ट्स की झलक पाने के लिया काफी उत्साहित हैं। टीवी पर वापसी को लेकर दीपिका कक्कड़ ने बताया कि यह म्यूजिक वीडियो उनके लिए इसलिए आसान रहा क्योंकि इसकी शूटिंग महज एक दिन में पूरी हो गई। उन्होंने कहा कि सुबह शूट के लिए जाना और काम खत्म होने के बाद वापस घर आ जाना उनके लिए काफी सुविधाजनक था। इस प्रोजेक्ट में लंबे समय तक शूटिंग करने या व्यस्त और थकाऊ शेड्यूल का हिस्सा बनने की जरुरत नहीं पड़ी इसलिए वह इसे अपनी मौजूदा स्थिति के साथ आसानी से संभाल सकीं। कैंसर के इलाज के दौरान दीपिका कक्कड़ ने अपने करियर को लेकर चिंता और निराशा भी जाहिर की। उन्होंने बताया कि मौजूदा स्वास्थ्य स्थिति में उनके लिए हर दिन सेट पर जाकर कई घंटों तक लगातार काम करना आसान नहीं है। भावुक होते हुए एक्ट्रेस ने कहा कि उनका इलाज अभी जारी है और इसके चलते होने वाले साइड इफेक्ट्स से भी उन्हें गुजरना पड़ता है। ऐसे में उन्हें खुद यह चिंता सताती है कि इस परिस्थिति में कोई उन्हें नियमित टीवी सीरियल के लिए कैसे कास्ट करेगा। दीपिका कक्कड़ के फैंस को उम्मीद थी कि उनके कमबैक के बाद वह जल्द ही डेली सोप में नजर आ सकती है लेकिन एक्ट्रेस ने फिलहाल ऐसी किसी संभावना से इनकार किया है। दीपिका ने कहा कि वह अपनी मौजूदा परिस्थितियों को अच्छी तरह समझती हैं और उन्हें पता है कि इलाज के साथ रोजाना फुल–टाइम टीवी सीरियल करने के लिए अभी संभव नहीं है। दीपिका कक्कड़ ने पिछले साल अपने ब्लॉग के जरिए ही अपने फैंस को अपनी बीमारी की जानकारी दी थी। पिछले डेढ़ साल से एक्ट्रेस लिवर कैंसर के इलाज से गुजर रही हैं और इस दौरान उन्हें कई साइड इफेक्ट्स का भी सामना करना पड़ा। इस मुश्किल समय में भी दीपिका ने अपने पल–पल की रिपोर्ट्स फैंस के साथ शेयर की थी।

मुस्लिम बॉयफ्रेंड से शादी पर हुए विवाद पर मोनालिसा ने तोड़ी चुप्पी, कहा–यह लव जिहाद नहीं, हिंदू रीति–रिवाज से शादी हुई

प्रेम कीटाणु’ का ट्रेलर कॉलेज के उन दिनों की याद दिलाता है, जब दोस्ती, प्यार, मस्ती और छोटी–छोटी बातों पर होने वाली नोकझोंक ही जिंदगी हुआ करती थी। शरारतों, कॉलेज की मस्ती, दोस्ती, रोमांस, दिल टूटने और एक ही लड़की से प्यार करने वाले दो लड़कों की कहानी से सजा यह ट्रेलर पुराने जमाने की मजेदार हिंदी फिल्मों की याद दिलाता है। रंगीन, मजेदार और रोमांस से भरपूर यह ट्रेलर कॉलेज के उन दिनों को फिर से जीने का मौका देता है, जहां हर दिन कुछ नया और मजेदार होता था। फिल्म में वीर पहाड़िया एक ऐसे लड़के के किरदार में नजर आ रहे हैं, जो प्यार में पूरी तरह डूबा हुआ है और जिसे समझ ही नहीं आ रहा कि दिल के इस मामले को कैसे संभाले। दोस्ती, प्यार, जलन और दिल टूटने के बीच फंसा उनका किरदार अपनी मासूमियत और सच्चे प्यार से दिल जीत लेता है। वहीं, अपारशक्ति खुराना अपने स्टाइल और स्वैग से अलग ही रंग जमाते नजर आते हैं। उनका स्टाइलिश अंदाज और रौब हर किसी का ध्यान खींचता है। लेकिन जब दोनों को एक ही लड़की से प्यार हो जाता है, तो शुरू होती है प्यार, टक्कर और खूब सारी मजेदार नोकझोंक। इस प्यार की कहानी के बीच हैं आफिया सैयद, जिनके किरदार के इर्द–गिर्द दोनों लड़कों की दुनिया घूमने लगती है। दो अलग–अलग अंदाज में मिलने वाले प्यार के बीच उनकी मौजूदगी कहानी को और दिलचस्प बनाती है। प्यार में पड़ने की खुशी, उलझन और उससे जुड़ी मस्ती को फिल्म में मजेदार अंदाज में दिखाया गया है। वहीं, राकेश बेदी और निखिल विजय भी अपने किरदारों से कहानी में हंसी और मस्ती का तड़का लगाते हैं। दोस्ती, मजाक और मजेदार हालात से भरी यह कहानी हर किरदार के साथ और भी दिलचस्प बनती जाती है। ट्रेलर की खास बातों में इसका संगीत भी शामिल है। प्यार, दोस्ती और दिल टूटने के पलों के साथ फिल्म के गाने कहानी को और खूबसूरत बनाते हैं। गानों में पुराने हिंदी फिल्मों जैसा रंग देखने को मिलता है। फिल्म के रंगीन नजारे, मस्ती भरा माहौल और बड़े पर्दे वाला अंदाज इसे एक पूरी तरह से बॉलीवुड मसाला एंटरटेनर बनाते हैं। अपूर्व सिंह कार्की के निर्देशन में बनी ‘प्रेम कीटाणु’ को अवानिका फिल्म्स के तहत गौरव वर्मा ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म दोस्ती, पहले प्यार, दिल टूटने और बड़े होने के उस दौर की कहानी है, जिसमें हर दिन कुछ नया देखने को मिलता है। दोस्तों की मस्ती, पहले प्यार की उलझन और एक लड़की के लिए दो लड़कों की मजेदार टक्कर से सजा यह ट्रेलर दर्शकों को हंसाने और उनका मनोरंजन करने का वादा करता है। अपने गानों से पहले ही चर्चा में आई ‘प्रेम कीटाणु’ अब अपने ट्रेलर के साथ प्यार, दोस्ती, हंसी, मस्ती और ढेर सारे बॉलीवुड मसाले का मजेदार मेल लेकर आई है। यह फिल्म पहले प्यार की मासूमियत और कॉलेज के दिनों की मस्ती को एक रंगीन और मनोरंजक अंदाज में बड़े पर्दे पर पेश करने के लिए तैयार है।

काज़ी तौकीर से बदतमीज़ी पर घिरीं मनोज तिवारी की बेटी रीति तिवारी

रियलिटी शो बिग बॉस 20 के घर में रोज नए विवाद देखने को मिल रहे हैं। इस बार भोजपुरी सिंगर–एक्टर और बीजेपी सांसद मनोज तिवारी की बेटी रीति तिवारी अपने रवैये और तीखी भाषा को लेकर सोशल मीडिया यूज़र्स के निशाने पर आ गई हैं। सह–कंटेस्टेंट काज़ी तौकीर के साथ हुई एक तीखी बहस के दौरान रीति की टिप्पणियों को दर्शकों ने ष्बदतमीज़ष और ष्अपमानजनकष करार दिया है। हालांकि रीति ने अपनी एक टिप्पणी के लिए बाद में माफी भी मांगी, लेकिन ग (पूर्व में ट्विटर) पर नेटिज़न्स का गुस्सा शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। यह बहस तब हुई जब होस्ट सलमान खान ने काज़ी को मेडिकल इमरजेंसी का नाटक करने के लिए फटकार लगाई। जब घर वालों ने काज़ी से कहा कि उनकी हरकतों से उन्हें दुख हुआ है क्योंकि वे सच में उनके लिए परेशान थे, तो काज़ी को उनकी बात समझ में आई। सलमान ने इस सीज़न में अब तक काज़ी के परफॉर्मेंस की तारीफ़ भी की, लेकिन रीति के दखल ने जल्द ही एक अलग वजह से सबका ध्यान खींचा। बातचीत के दौरान, रीति ने काज़ी को ष्नकली बाबा और घिनौनाष कहा। उन्होंने काज़ी के मशहूर डायलॉग ष्आई एम ए रॉकस्टार बेबीष को बदलकर ष्आई एम ए फ्रॉडस्टर, बेबीष (मैं एक धोखेबाज़ हूँ, बेबी) कह दिया। काज़ी ने इस टिप्पणी पर आपत्ति जताई और उनसे बदतमीज़ी न करने को कहा। तब रीति ने कहा, ष्तुम कौन हो? तुम मेरा म्यूट बटन क्यों दबाओगे? क्या मैं तुम्हारे पिता की नौकरानी हूँ? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं कौन हूँ? तुम किससे बात कर रहे हो?ष काज़ी शांत रहे और रीति से कहा कि वे बहस में उनके पिता को न घसीटें। रीति ने बाद में इस टिप्पणी के लिए माफ़ी मांगी, लेकिन इस बातचीत की वजह से सोशल मीडिया पर उनकी काफ़ी आलोचना हुई। एक एक्स यूज़र ने लिखा, ष्पता नहीं मनोज तिवारी की बेटी रीति तिवारी बिग बॉस में कैसे आ गईं। लेकिन उन्हें देखने के बाद यह साफ़ है कि वह सिर्फ़ शोहरत पाने और लाइमलाइट में रहने के लिए किसी से भी उलझ सकती हैं। मैं मानता हूँ कि वह एक नेता की बेटी हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह किसी के साथ बदतमीज़ी या अनादर कर सकती हैं।

150 रुपये से कम में मिलेंगे ये बेस्ट स्मज प्रूफ काजल

खूबसूरत और गहरी आंखें हर किसी का ध्यान अपनी ओर आसानी से खींच लेती हैं। मेकअप की बात की जाए, तो काजल एक ऐसी चीज है, जो बिना किसी ज्यादा मेहनत के आपके लुक को चेंज कर देती हैं। ऐसे में अगर आप भी अपनी आंखों की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए बजट फ्रेंडली और लॉन्ग लास्टिंग काजल की तलाश में हैं, तो आपको अधिक पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है। मार्केट में ऐसे कई आपको बेहतरीन ब्रांड्स हैं, जो 150 रुपए के आसपास किफायती कीमत में हाई क्वालिटी काजल ऑफर करते हैं। तो आइए जानते हैं इन काजल के बारे में...

प्रोडक्ट, कीमत और शॉपिंग प्लेटफॉर्म की टेबल

अगर आप भी ब्रांड्स की कीमत और प्लेटफॉर्म के बारे में जानना चाहती हैं, तो यहां पर दी गई जानकारी आपसे काम आ सकती है।

ब्रांड और काजल का नाम कीमत प्लेटफॉर्म

नायका मैजिक स्मजप्रूफ काजल – घ्139 – छलां

मार्स कोल ऑफ फेम काजल – घ्149 – ड।ै ब्वेउमजपबे

मेबेलिन न्यू यॉर्क मैट फिनिश – घ्129 – ।उंवद

स्विस ब्यूटी यू एंड आई काजल – घ्151 – सिपचांतज

प्लम डीप ब्लैक ट्विस्टर काजल – घ्123 – च्सनउ ळववकदमे

नायका मैजिक स्मजप्रूफ काजल

नायका का स्मजप्रूफ काजल राउंड चेहरे पर काफी ज्यादा अच्छा लगता है।

नायका मैजिक स्मजप्रूफ काजल गहरा काला रंग देता है, जोकि एक ही स्ट्रोक में आंखों पर परफेक्ट शेप बना देता है।

यह स्मज प्रूफ काजल पूरे दिन बिना फैले लॉन्ग लास्टिंग आपकी आंखों पर टिका रहता है। जिससे आपको बार–बार टचअप की जरूरत भी नहीं होती है।

मार्स कोल ऑफ फेम

अगर आप डिफ्रेंट ब्रांड ट्राई करना चाहती हैं, तो मार्क लोक ऑफ फेम काजल आपके काम आ सकता है।

अगर आपकी आंखों से भी पानी आता है या पसीना ज्यादा आता है, तो मार्स का काजल बेस्ट है।

इसका स्मूथ टेक्सचर पलकों पर आसानी से ग्लाइड होता है, यह काजल आंखों को बोल्ड और डिफाइंड लुक देता है।

मेबेलिन न्यू यॉर्क मैट काजल

मेबेलिन का न्यू यॉर्क मैट काजल ऑफिस जाने वाली महिलाओं की पहली पसंद बन सकता है।

डेली रूटीन के लिए मेबेलिन का न्यू यॉर्क मैट काजल पसंदीदा ऑप्शंस में से है, जोकि आंखों को एक नेचुरल और मैट फिनिश लुक देता है।

कम कीमत में आपको ब्रांड और हाई–एंड ब्यूटी प्रोडक्ट्स जैसा एक्सपीरियंस और डार्क पिग्मेंटेशन देता है।

स्विस ब्यूटी यू एंड आई काजल

कमजोर स्किन वाली आंखों के लिए यह काजल एक अच्छी च्वॉइस हो सकती है।

डर्मेटोलॉजिकली टेस्टेड होने की वजह से आंखों की नाजुक स्किन को किसी भी तरह का नुकसान नहीं होता है।

इस काजल को लगाने के फौरन बाद यह सूख जाता है और आंखों के चारों ओर फैलकर डार्क सर्कल्स जैसा लुक नहीं बनने देता है।

प्लम डीप ब्लैक ट्विस्टर काजल

प्लम का डीप ब्लैक ट्विस्टर काजल एक बेहतर च्वॉइस हो सकता है।

बता दें कि प्लम का काजस 100: वेगन होता है और हानिकारक केमिकल्स भी नहीं होते हैं। यह काजल सेंसिटिव आंखों के लिए परफेक्ट है।

इस काजल का ट्विस्ट अप डिजाइन और क्रीमी फॉर्मूला आंखों पर बिना किसी खिंचाव या दिक्कत के आसानी से लग जाता है।

कॉकरोच भगाने का ट्विंकल खन्ना ने बताया देसी जुगाड़, तेज पत्ता-लौंग से ऐसे रखें किचन को साफ

रसोई में अचानक कॉकरोच या लाल चींटियां नजर आ जाएं तो पूरा किचन साफ करने की टेंशन होने लगती है। खासकर कॉकरोच से छुटकारा पाना आसान नहीं होता। ऐसे में लोग बाजार में मिलने वाले कीटनाशक स्प्रे का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन कुछ लोग तेज गंध और रसायनों की वजह से इनके इस्तेमाल से बचना चाहते हैं। इसी बीच एक्ट्रेस और राइटर ट्विंकल खन्ना ने सोशल मीडिया पर किचन के इन 'बिन बुलाए मेहमानों' को दूर रखने के लिए एक घरेलू टिप शेयर की है। इसमें तेज पत्ता, लौंग और सिरके जैसी चीजों का इस्तेमाल किया जाता है। आइए जानते हैं इसे कैसे तैयार किया जाता है और किचन में इसका इस्तेमाल किस तरह किया जा सकता है।

ट्विंकल खन्ना ने शेयर किया कॉकरोच भगाने का घरेलू उपाय

ट्विंकल खन्ना ने इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए इस घरेलू टिप के बारे में बताया। इसमें तेज पत्ता और लौंग को पानी और सिरके के साथ मिलाकर एक मिश्रण तैयार करने की बात कही गई है। इस मिश्रण को स्प्रे बोतल में भरकर किचन की दराजों, कैबिनेट के कोनों और उन जगहों पर इस्तेमाल किया जा सकता है, जहां कॉकरोच या लाल चींटियां ज्यादा दिखाई देती हैं।

कैसे बनाएं तेज पत्ता और लौंग वाला होममेड स्प्रे?

तेज पत्ता और लौंग लेंः सबसे पहले 8–10 लौंग और 2–3 तेज पत्ते लें। दोनों को हल्का कूट या क्रश कर लें। इससे इनकी खुशबू और प्राकृतिक कंपाउंड पानी में बेहतर तरीके से मिल सकते हैं।

पानी और सिरका मिलाएंः अब एक कप पानी और एक कप सिरका लें। दोनों को एक बर्तन में डालें और इसमें कुटी हुई लौंग और तेज पत्ता मिला दें।

मिश्रण को उबालेंः इस मिश्रण को कुछ देर उबालें। इसके बाद गैस बंद करके इसे पूरी तरह ठंडा होने दें। ठंडा होने के बाद इसे अच्छी तरह छान लें, ताकि तेज पत्ता और लौंग के टुकड़े अलग हो जाएं।

स्प्रे बोतल में भरेंः अब तैयार मिश्रण को एक साफ स्प्रे बोतल में भर लें। इसे किचन की दराजों, कैबिनेट के कोनों और उन जगहों पर हल्का स्प्रे किया जा सकता है, जहां कॉकरोच या चींटियां दिखाई देती हैं।

ट्विंकल खन्ना ने मजेदार अंदाज में कही ये बात

ट्विंकल खन्ना ने इस टिप को अपने खास मजाकिया अंदाज में शेयर किया। उन्होंने मजाक करते हुए कहा कि अगर इस स्प्रे का इस्तेमाल इंसानों पर भी किया जा सकता, तो देर रात आने वाले दो पैरों और छह पैरों वाले 'मेहमानों' से भी छुटकारा मिल जाता। उनकी इस बात ने घरेलू टिप को मजेदार अंदाज दे दिया और सोशल मीडिया पर यह टिप लोगों का ध्यान खींचने लगी।

सिर्फ स्प्रे से नहीं मिलेगी कॉकरोच से पूरी तरह निजात

अगर किचन में बार–बार कॉकरोच दिखाई दे रहे हैं, तो केवल किसी घरेलू स्प्रे पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है।

कॉकरोच को दूर रखने के लिए किचन की साफ–सफाई पर भी ध्यान देना जरूरी है।

खाने के टुकड़े और जूठा खाना खुले में न छोड़ें।

किचन का कूड़ा नियमित रूप से बाहर करें।

सिंक और आसपास की जगह को सूखा रखें।

खाने की चीजों को एयरटाइट डिब्बों में रखें।

दराजों और कैबिनेट के कोनों की नियमित सफाई करें।

जहां से कॉकरोच अंदर आ सकते हैं, उन दरारों और छेदों को बंद करें।

अगर कॉकरोच की समस्या बहुत ज्यादा है या बार–बार लौट रही है, तो पेशेवर पेस्ट कंट्रोल की मदद लेना ज्यादा प्रभावी हो सकता है।

पेट खराब तो दिमाग भी खराब, मूड बिगड़ने पर क्यों शुरु हो जाती है पाचन से जुड़ी समस्याएं

क्या आपने कभी घबराहट या उत्साह के समय पेट में अजीब सी हलचल या मरोड़ महसूस की है? जब आप सोचते हैं कि इन भावनाओं की वजह क्या थी, तो यह बात समझ में आती है कि आपका दिमाग और आपका पेट किसी न किसी तरह से जुड़े हुए हैं। इस बात से बहुत लोग अनजान हैं कि हमारा दिमाग और पेट हर समय एक–दूसरे से संपर्क में रहते हैं और इसी वजह से तनाव, एंग्जायटी (बेचैनी) और दूसरी तेज भावनाओं के कारण पाचन से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं, जैसेरूदस्त, पेट फूलना, पेट में ऐंठन और जी मिचलाना।

दिमाग और आंतों के बीच क्या है कनेक्शन

एक गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट ने समझाया कि हर किसी को यह पता होना चाहिए कि एक हेल्दी लाइफस्टाइल कैसे दिमाग और आंतों के कनेक्शन को बेहतर बना सकती है। दिमाग और आंतें नसों, हार्मोन और आंतों के बैक्टीरिया के जरिए जुड़े होते हैं। आपके पाचन तंत्र में करोड़ों नर्व सेल्स (न्यूरॉन्स) होते हैं। यह एंटरिक नर्वस सिस्टम, जो पाचन के कामों को कंट्रोल करता है, वेगस नर्व (अंहने दमतअम) नाम की एक बड़ी नस के जरिए आपके दिमाग से बातचीत कर सकता है। दिमाग की तरह ही, आंतें भी सेरोटोनिन और डोपामाइन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर बनाती हैं। ये केमिकल मैसेंजर नर्व सेल्स को एक–दूसरे से बातचीत करने और पाचन को रेगुलेट करने में मदद करते हैं। ये आपके मूड पर भी असर डाल सकते हैं। आंतों में रहने वाले बैक्टीरिया जिन्हें गट माइक्रोबायोम कहा जाता है सिर्फ पाचन में ही मदद नहीं करतेय वे इन न्यूरोट्रांसमीटर को बनाने और आपके मूड को रेगुलेट करने में भी भूमिका निभाते हैं।

आंतों को कैसे परेशान करता है तनाव?

आपके दिमाग और आंतों के बीच का कनेक्शन कुछ जरूरी काम करता है, जैसे आपके दिमाग को यह बताना कि आपको भूख लगी है या पेट भर गया है। लेकिन यह आपके मूड और तनाव के लेवल को आपके पाचन पर असर डालने की भी इजाजत देता है। तनाव और एंग्जायटी दिमाग के फाइट–ऑर–फ्लाइट (लड़ो या भागो) रिस्पॉन्स को ट्रिगर करते हैं। यह रिस्पॉन्स आपके पूरे शरीर को किसी खतरे का सामना करने के लिए तैयार करता है, जिससे सिस्टम में ऐसे हार्मोन भर जाते हैं जिनकी वजह से खाना पाचन तंत्र से बहुत तेजी से या बहुत धीरे–धीरे गुजर सकता है। इससे दस्त या कब्ज, या जी मिचलाना या दर्द भी हो सकता है। यह प्रोसेस मांसपेशियों में दर्दनाक ऐंठन पैदा कर सकता है और आपकी आंतों के लिए खाने से न्यूट्रिएंट्स को पचाना और सोखना मुश्किल बना सकता है। और तनाव गट माइक्रोबायोम को भी बिगाड़ सकता है।

पेट भी दिमाग पर डालता है असर

क्योंकि आपका दिमाग और पेट एक–दूसरे को सिग्नल भेजते रहते हैं, इसलिए आपका पेट भी आपके दिमाग पर असर डाल सकता है। अगर आपका पेट स्वस्थ नहीं है, तो यह दिमाग को जो सिग्नल भेजता है, उससे आपका मूड खराब हो सकता है और तनाव हो सकता है। और यह तनाव आपकी पाचन संबंधी समस्याओं को और बढ़ा सकता है। तनाव पेट में बैक्टीरिया के संतुलन को बिगाड़ सकता है, जिससे डिप्रेशन, एंग्जायटी और पाचन संबंधी लक्षण शुरू हो सकते हैं। इस चक्र से बाहर निकलने के लिए, फल, सब्जियां और साबुत अनाज से भरपूर संतुलित आहार लें। फाइबर और प्रोबायोटिक खाद्य पदार्थ, जैसे दही, को शामिल करने से पेट के बैक्टीरिया का स्वस्थ संतुलन बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

तनाव को मैनेज करने के तरीके

– व्यायाम से आपका मूड अच्छा होता है और तनाव कम होता है। ऐसी गतिविधियां चुनें जिनमें आपको मजा आता हो।

–हर रात 7 से 9 घंटे सोने की कोशिश करें। अपने बेडरूम को आरामदायक और शांत रखें।

–गहरी सांस लेना आराम करने का एक तरीका है। अपनी आखें बंद करें और कई बार गहरी सांस लें – नाक से अंदर और मुंह से बाहर।

– हर दिन कुछ ऐसा करें जिससे आपको खुशी मिले, चाहे वह किसी हॉबी में समय बिताना हो या संगीत सुनना हो।

– ताजी हवा और प्रकृति मूड को बेहतर बना सकते हैं और आपके माइक्रोबायोम (पेट के बैक्टीरिया) में विविधता ला सकते हैं।

फेस्टिव सीजन में ट्राई करें ये 4 ट्रेंडी अंगरखा स्टाइल को-ऑर्ड सेट डिजाइन

इन दिनों अंगरखा स्टाइल अधिकतर महिलाओं की पहली पसंद बना हुआ है। अब चाहे शादी–ब्याह हो या फिर कोई खास फंक्शन या फिर कोई खास त्योहार , महिलाएं अंगरखा स्टाइल वाले आउटफिट्स को पहन रही है। यदि आप भी इस तरह की आउटफिट पहनना चाहती हैं, तो आपको रॉयल और परफेक्ट एथनिक लुक मिल सके, तो परेशान होने के बजाय इस फेस्टिव सीजन कुछ ट्रेंडी अंगरखा स्टाइल को–ऑर्ड सेट डिजाइंस पहन सकते हैं।

सिल्क और चंदेरी अंगरखा को–ऑर्ड सेट

फेस्टिव सीजन के दौरान आप एकदम आरामदायक और रॉयल आउटफिट की तलाश में हैं, तो आपके लिए सिल्क और चंदेरी अंगरखा को–ऑर्ड सेट परफेक्ट रहेगा। आप गोटा–पट्टी, जरी या आरी वर्क भी चुन सकती हैं। अनंत चतुर्दशी, नवरात्रि, दीवानी और भाई दूज पर आप इस तरह के अंगरखा को–ऑर्ड सेट पहन सकती हैं।

स्टाइल टिप– इस सेट के साथ आप मिनिमल ज्वलेरी और पांरपरिक मोजड़ी वियर कर सकती हैं।

प्रिंटेड कॉटन अंगरखा सेट

आज के ट्रेंडिंग दौर में ब्लॉक प्रिंट, अजरख और बांधनी प्रिंट अंगरखा काफी ट्रेंड कर रहे हैं। फेस्टिव सीजन में अपने लुक को खास बनाने के लिए आप परफेक्ट कॉटन अंगरखा को–ऑर्ड सेट ट्राई कर सकती हैं। वहीं, हल्के–फुल्के फैब्रिक के साथ पोंचो या फ्लेयर्ड प्लाजो वाला यह कॉम्बिनेशन जबरदस्त लगेगा।

स्टाइल टिप– इस तरह के को–ऑर्ड सेट के साथ चांदबाली

इयररिंग्स या पर्ल नेकलेस सेट कैरी कर सकते हैं। इसके साथ ही फुटवियर में एम्ब्रॉयडरी वर्क वाली फ्लैट स्लीपर्स सबसे बेस्ट ऑप्शन रहेगी।

ऑर्गेंजा और जॉर्जेट अंगरखा को–ऑर्ड सेट

आजकल ऑर्गेंजा और जॉर्जेट फैब्रिक महिलाएं काफी पसंद कर रही हैं। वैसे इस तरह के फैब्रिक दिखने में काफी सुंदर लगते हैं। इनमें आप एकदम स्टाइलिश नजर आएगी और कंफर्टेबल अनुभव मिलेगा। इस बार आप त्योहारी सीजन में ऑर्गेंजा और जॉर्जेट अंगरखा को–ऑर्ड सेट को वियर कर सकते हैं। इस तरह की आउटफिट आप ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट्स से भी खरीद सकते हैं।

स्टाइल टिप– ऑर्गेंजा और जॉर्जेट अंगरखा को–ऑर्ड सेट के साथ आप मीनाकारी या फिर कुंदन–जड़ाऊ ज्वेलरी ट्राई कर सकती हैं। फुटवियर में आप जूती या फिर कोल्हापुरी चप्पल पहन सकते हैं।

पेप्लम स्टाइल अंगरखा को–ऑर्ड सेट

पेप्लम स्टाइल अंगरखा को–ऑर्ड सेट पहनने के लिए सबसे अच्छा ऑप्शन हो सकता है। आजकल इस तरह के कट–आउट डिजाइन काफी फेमस है और यह आपको एकदम स्लिम और परफेक्ट लुक देगा। इस नवरात्रि के दौरान डांडिया नाइट में भी पहन सकती हैं। फेस्टिव सीजन से लेकर ऑफिस पार्टी में भी इस तरह के आउटफिट पहन सकते हैं।

संक्षिप्त

लोकेशन डेटा उल्लंघन पर गूगल पर 46.3 करोड़ डॉलर जुर्माना

उपयोगकर्ताओं के लोकेशन डेटा के गलत इस्तेमाल को लेकर यूरोपीय संघ (ईयू) ने गूगल पर 46.3 करोड़ अमेरिकी डॉलर का जुर्माना लगाया गया है। ईयू के डेटा गोपनीयता नियामक ने सोमवार को यह जानकारी दी। आयरलैंड के डेटा संरक्षण आयोग (डीपीसी) ने अपनी जांच में पाया कि गूगल ने उपयोगकर्ताओं की ब्राउजिंग और सर्च हिस्ट्री की निगरानी करने वाली सेटिंग वेब एंड ऐप एक्टिविटी तथा मोबाइल फोन के जरिए उनके जाने वाले स्थानों की निगरानी करने वाली सेवा लोकेशन हिस्ट्री में लोकेशन डेटा का कानूनी या निष्पक्ष तरीके से प्रसंस्करण नहीं किया। नियामकों ने यह भी पाया कि एंड्रॉइड मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम में लोकेशन एक्यूरेसी फीचर के तहत व्यक्तिगत डेटा को प्रोसेस करते समय कंपनी कानूनी, निष्पक्ष और पारदर्शी रहने में विफल रही। गूगल का यूरोपीय मुख्यालय डबलिन में होने के कारण आयरलैंड यूरोपीय संघ में अमेरिकी प्रौद्योगिकी दिग्गज कंपनी का मुख्य नियामक है। गूगल ने एक बयान में कहा, यह मामला पुरानी नीतियों से जुड़ा है, जिन्हें अब अपडेट किया जा चुका है। वर्ष 2019 के बाद से हमने अपनी कार्यप्रणाली में काफी सुधार किया है और ऐसे मजबूत टूल्स पेश किए हैं जिनसे लोकेशन डेटा को प्रबंधित करना आसान हो जाता है। नियामकों ने कहा कि लोकेशन डेटा एक प्रकार का व्यक्तिगत डेटा है, जिसे गूगल द्वारा एकत्र किया जाता है और इसका उपयोग किसी व्यक्ति के स्थान का अनुमान लगाने के लिए किया जा सकता है।

त्योहारी सीजन में हवाई किराये पर नहीं लगेगी सीमा, राममोहन नायडू ने दी सलाह

नागर विमानन मंत्री के. राममोहन नायडू ने मंगलवार को कहा कि सरकार आगामी त्योहारी मौसम की व्यस्त मांग के बीच हवाई किराये पर किसी तरह की सीमा नहीं लगाएगी, लेकिन एयरलाइन कंपनियों को टिकट के दाम उचित स्तर पर रखने की सलाह देगी। नायडू ने क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ावा देने वाली उड़ान योजना के अगले चरण के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर के मौके पर संवाददाताओं से यह बात कही। उन्होंने कहा कि सरकार त्योहारी मौसम और महत्वपूर्ण आयोजनों के दौरान हवाई किराये की स्थिति पर नजर रखती है और एयरलाइन कंपनियों के साथ लगातार संपर्क में रहती है। उन्होंने कहा, ''हम एयरलाइन कंपनियों के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं और नियमित बैठकें भी करते हैं। हम उनसे यह सुनिश्चित करने को कहते हैं कि त्योहारों के समय किराया उचित स्तर पर रखा जाए, ताकि इस महत्वपूर्ण समय में यात्रा करने वाले लोग इससे लाभान्वित हो सकें।'' नागर विमानन मंत्री इस सवाल का जवाब दे रहे थे कि क्या सरकार आगामी त्योहारी मौसम को देखते हुए हवाई किराये पर किसी तरह की सीमा लगाएगी। उन्होंने कहा कि पश्चिम एशिया में जारी संकट के कारण विमान ईंधन (एटीएफ) की कीमतें बढ़ गई हैं। यह ईंधन किसी भी एयरलाइन के परिचालन खर्च का बड़ा हिस्सा होता है। उन्होंने कहा कि एटीएफ हवाई किराये का 40 से 43 प्रतिशत होता है और ईंधन की कीमत में मामूली बढ़ोतरी भी टिकट के दाम को सीधे प्रभावित करती है। नायडू ने कहा, ''यह जरूरी नहीं कि त्योहारी समय या किसी अन्य वजह से हो, बल्कि मौजूदा संकट की स्थिति भी इसका कारण है।

मारुति सुजुकी बढ़ाएगी पूंजीगत निवेश, जीएसटी 2.0 के बाद यात्री वाहनों की बिक्री में 36 फीसदी उछाल

यात्री वाहन क्षेत्र की अग्रणी कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया 'जीएसटी 2.0' के तहत कर दरों को तर्कसंगत बनाए जाने के बाद यात्री वाहनों की मांग में आए भारी उछाल को देखते हुए अपनी पूंजीगत व्यय योजनाओं को तेजी से आगे बढ़ा रही है। कर सुधार का एक साल पूरा होने पर कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) हिसाशी ताकेउची ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अप्रैल–अगस्त, 2026 के दौरान मारुति सुजुकी की यात्री वाहन बिक्री में सालाना आधार पर करीब 36 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि इस अवधि में प्रवेश स्तर के वाहनों की बिक्री 96 प्रतिशत से अधिक बढ़ी है। ताकेउची ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''एक साल पहले माल एवं सेवा कर (जीएसटी) सुधार के ऐतिहासिक कदम ने भारत की वृद्धि यात्रा को नयी गति दी थी। मारुति सुजुकी में अप्रैल–अगस्त 2026 के दौरान यात्री वाहन की बिक्री सालाना आधार पर करीब 36 प्रतिशत बढ़ी। हम विशेष रूप से प्रवेश स्तर के खंड में 96 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि से उत्साहित हैं, जहां कीमतें किफायती होने से लोगों को लाभ मिला। उन्होंने कहा कि इससे भारतीय उपभोक्ताओं की क्षमता और उत्पादों के किफायती होने के महत्व का पता चलता है। ताकेउची ने कहा, ''जब घरेलू उद्योग पैमाना और प्रतिस्पर्धा हासिल कर लेता है, तो अधिक वैश्विक कारोबार अपने आप हमारे पास आने लगता है, जिससे निर्यात बढ़ता है। इस वृद्धि से उत्साहित होकर हम अपनी पूंजीगत निवेश की योजनाओं को गति दे रहे हैं, जिसका लाभ पूरी अर्थव्यवस्था को मिलेगा।'' महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के वाहन और कृषि क्षेत्र के कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ राजेश जेजुरिकर ने कहा कि जीएसटी के युक्तिकरण से अर्थव्यवस्था को स्पष्ट गति मिली है और प्रमुख श्रेणियों में मांग को समर्थन मिला है। उन्होंने एक बयान में कहा, ''इन बदलावों के बाद से हमने एसयूवी श्रेणी में 17 प्रतिशत की वृद्धि देखी है, जबकि हल्के वाणिज्यिक वाहनों (एलसीवी) और ट्रैक्टर में लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जीएसटी परिषद ने 22 सितंबर, 2025 से कर ढांचे में बदलाव को मंजूरी दी थी, जिसके तहत 1,200 सीसी से कम क्षमता और 4,000 मिमी से कम लंबाई वाले पेट्रोल, एलपीजी तथा सीएनजी वाहन पर कर की दर 28 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत कर दी गई थी। वाहन डीलर संघों के महासंघ (फाडा) के अध्यक्ष साई गिरिधर ने कहा कि इस सुधार ने सभी वाहन श्रेणियों में उत्पादों को किफायती बनाकर खुदरा मांग को बढ़ावा दिया है।

भारत ने श्रीलंका को 147 रन से हराकर जीता गोल्ड मेडल

स्मृति मंधाना और ऋचा घोष की तूफानी पारियों के बाद स्पिनरों के फिरकी के जादू से गत चौंपियन भारत ने एशियाई खेलों की महिला टी20 क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल में मंगलवार को यहां श्रीलंका को 147 रन से रौंदकर स्वर्ण पदक जीता जो मौजूदा खेलों में देश का सोने का पहला तमगा है। भारत के 217 रन के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की टीम दीप्ति शर्मा (छह रन पर तीन विकेट), शेफाली वर्मा (तीन रन पर दो विकेट), श्रेयंका पाटिल (नौ रन पर दो विकेट) और श्री चरणी (13 रन पर दो विकेट) की बलखाती गेंदों के सामने 15. 4 ओवर में सिर्फ 69 रन पर ढेर हो गई। श्रीलंका की ओर से कप्तान चामरी अटापट्टू ने सर्वाधिक 29 रन बनाए जबकि उनके अलावा सिर्फ कौशिनी नुथ्यांगना (14) और कविशा दिलहारी (11) ही दोहरे अंक में पहुंच सकी। भारत ने इसी महीने श्रीलंका को ही हराकर एशिया कप का खिताब भी जीता था। भारत ने इससे पहले स्मृति (45 गेंद में 79 रन, सात छक्के, पांच चौके) के अर्धशतक और शेफाली (48 रन, 29 गेंद, तीन छक्के, तीन चौके) के साथ उनकी पहले विकेट की 99 रन की तेजतर्रार साझेदारी की बदौलत तीन विकेट पर 216 रन का बड़ा स्कोर खड़ा किया। ऋचा घोष (22 गेंद में नाबाद 49 रन, छह चौके, तीन छक्के) ने डेथ ओवरों में तूफानी बल्लेबाजी करते हुए भारत का स्कोर 200 रन के पार पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। श्रीलंका को रजत पदक मिला जबकि पाकिस्तान ने बांग्लादेश को 31 रन से हराकर कांस्य पदक जीता। लक्ष्य का पीछा करने उतरे श्रीलंका की शुरुआत बेहद खराब रही और टीम कभी लक्ष्य के करीब पहुंचने की स्थिति में भी नहीं दिखी। श्रीलंका ने पावर प्ले में दो विकेट खोकर 41 रन बनाए। क्रांति गौड़ के पहले ही ओवर में श्रेयंका पाटिल ने इमेशा दुलानी का आसान कैच टपकाया। कप्तान चामरी अटापट्टू ने नंदनी शर्मा पर दो चौके जड़े लेकिन शेफाली ने तीसरे ओवर में इमेशा (03) को ऋचा के हाथों स्टंप करा दिया। चामरी ने क्रांति पर भी दो चौके मारे लेकिन शेफाली ने हसिनी परेरा (00) को पवेलियन भेजकर श्रीलंका को दूसरा झटका दिया। चामरी भी इसके बाद रन गति बढ़ाने के दबाव में दीप्ति शर्मा की गेंद को हवा में खेलकर

भारती फुलमाली को आसान कैच दे बैठीं। श्रेयंका ने हर्षिता समरविक्रम (00) को अपनी ही गेंद पर लपका जबकि श्री चरणी ने हंसिमा करुणारत्ने (01) को भारती के हाथों कैच कराके नौवें ओवर में श्रीलंका का स्कोर पांच विकेट पर 49 रन कर दिया। दीप्ति ने कविशा दिलहारी (11) को अपनी ही गेंद पर लपका जबकि श्री चरणी ने काव्या काविंदी (02) को ऋषा के हाथों कैच कराके श्रीलंका को सातवां झटका दिया। श्रेयंका ने कौशिनी को बोल्ड करके मौजूदा खेलों में भारत के स्वर्ण पदक का खाता खोला। इससे पहले गत चौम्पियन भारत ने टॉस जीतने के बाद पावरप्ले का पूरा फायदा उठाया। स्मृति और शेफाली ने छह ओवर में टीम का स्कोर बिना विकेट खोए 59 रन तक पहुंचाया। एशिया कप से ही शानदार फॉर्म में चल रहीं दोनों सलामी बल्लेबाजों ने 60 गेंद में 99 रन की साझेदारी करके फाइनल में टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई। भारत को रोकने के लिए कुछ विशेष करने की जरूरत थी लेकिन श्रीलंकाई टीम की गेंदबाजी में साधारण नजर आई और उसने भारतीय सलामी बल्लेबाजों को अपनी शर्तों पर खेलने दिया। भारत ने अंततः एशियाई खेलों के इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर खड़ा किया। शेफाली और स्मृति दोनों ने स्पिनरों की जमकर धुनाई की। स्मृति ने तीसरे ओवर में बाएं हाथ की स्पिनर सुगंधिका कुमारी की लगातार गेंदों पर दो छक्के जड़े। इनमें से पहला बैकफुट से सीधे मैदान के ऊपर से लगाया गया जबकि अगली गेंद पर उन्होंने स्लॉग स्वीप खेलकर गेंद को दर्शकों के बीच पहुंचाया। इसके बाद तेज गेंदबाज मिताली अयोध्या का ओवर और भी महंगा साबित हुआ। स्मृति ने एक्स्ट्रा कवर के ऊपर से शानदार छक्का जड़कर पारी का अपना तीसरा छक्का लगाया। श्रीलंका की कप्तान चामरी अटापट्टू स्वयं पांचवां ओवर करने आईं और 19 रन लुटा बैठीं जिसमें तीन छक्के शामिल थे। इनमें से दो शेफाली के बल्ले से आए। उन्होंने पहले शॉर्ट गेंद को पुल करके सीमा के पार भेजा और अगली गेंद को मिडऑफ के ऊपर से छह रन के लिए भेजा। तीन गेंद बाद स्मृति ने श्रीलंकाई कप्तान तथा ऑफ स्पिनर की गेंद पर सीधा छक्का जड़ा। स्मृति ने कुल सात छक्के लगाए। एक और अर्धशतक के करीब पहुंच चुकी शेफाली ने बाएं हाथ की स्पिनर चामुडी प्रबोदा की गेंद पर रिवर्स स्वीप खेलने की कोशिश की लेकिन शॉट का सही संपर्क नहीं हुआ और वह कैच आउट हो गईं। भारत के लिए नंबर तीन का स्थान कुछ समय से परेशानी का सबब रहा है। इस मुकाबले में कप्तान हरमनप्रीत कौर (17 गेंद में 19 रन) तीसरे नंबर पर उतरीं और भारत की बढ़त को मजबूत करने की कोशिश की लेकिन एशिया कप के बाद से जारी उनका संघर्ष यहां भी दिखा और वह 15वें ओवर में लॉन्ग ऑफ पर कैच दे बैठीं। स्मृति शानदार शतक की ओर बढ़ रही थीं लेकिन सुगंधिका की गेंद पर एक और स्लॉग स्वीप खेलने की कोशिश में डीप में कैच आउट हो गईं। इसके बाद ऋचा ने डेथ ओवरों में एक और अहम पारी खेलते हुए भारत को 200 रन के पार पहुंचा दिया।

भारत ने रोमांचक 5 ओवर T20I मैच में जापान को 2 रन से हराया, अक्षर पटेल चमके

मंगलवार को खेले गए रोमांचक पांच–ओवर के इकलौते ज्20 प मैच में भारत ने जापान को दो रन से हराया। जापान ने मौजूदा वर्ल्ड चौंपियन भारत को 32/4 पर रोक दिया था, लेकिन अक्षर पटेल ने आखिरी ओवर में आठ रन का बचाव करते हुए जीत दिलाई। 33 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए मेज़बान टीम की शुरुआत खराब रही; पहले ओवर की पांचवीं गेंद पर ईशान किशन के सटीक थ्रो ने ओपनर लैचलान यामामोटो–लेक को सिर्फ़ एक रन पर रन–आउट कर दिया। वॉशिंगटन सुंदर के ठीक अगले ओवर में, इस ऑफ़–स्पिनर ने इब्राहिम ताकाहाशी को चार रन पर आउट कर दिया, जिससे जापान ने सात रन के स्कोर पर अपना दूसरा विकेट गंवा दिया। केंडेल काडोवाकी–फ्लेमिंग और बेंजामिन इतो–डेविस ने मिलकर रवि बिश्नोई की गेंदों पर 10 रन बनाए, जिससे जापान का स्कोर तीन ओवर के बाद 18/2 हो गया। जापान को बची हुई 12 गेंदों में 15 रनों की ज़रूरत थी। चौथे ओवर में, जापानी बल्लेबाजों ने वॉशिंगटन सुंदर की गेंदों पर सात रन बनाए, लेकिन ऑफ–स्पिनर ने आखिरी गेंद पर केंडेल काडोवाकी–फ्लेमिंग को 12 रन पर आउट कर दिया। चार ओवर के बाद जापान का स्कोर 25/3 हो गया और उन्हें आखिरी ओवर में आठ रनों की ज़रूरत थी। ऑलराउंडर अक्षर पटेल ने शानदार आखिरी ओवर फेंका और आठ रन बचा लिए। जोश से भरी जापान की टीम पांच ओवर में 30/3 रन ही बना सकी और सिर्फ़ दो रन से हार गई। भारत के लिए वॉशिंगटन सुंदर सबसे अच्छे गेंदबाज़ रहे, जिन्होंने दो विकेट लिए। इससे पहले, जापान के स्पिनरों ने ज़बरदस्त फ़ॉर्म में चल रही भारतीय बल्लेबाज़ी लाइन–अप को चौंका दिया और मौजूदा वर्ल्ड ज्20प चौंपियन टीम को पांच ओवर में 32/4 पर रोक दिया। भारत की तूफ़ानी बल्लेबाज़ी लाइन–अप में सिर्फ़

कप्तान श्रेयस अय्यर (12 गेंदों में 16 रन, एक चौके के साथ) ही दहाई का आँकड़ा छू पाए, जबकि अभिषेक शर्मा श्गोल्डन डकश (पहली ही गेंद पर आउट) का शिकार हुए। टीम इंडिया को जापान के स्पिनरों के ख़िलाफ़ शॉट खेलने में काफ़ी संघर्ष करना पड़ा। स्पिनरों को फील्डरों के जोश से भी काफ़ी मदद मिली। जापान के लिए चार्ली हारा–हिंज़े (2/17) सबसे अच्छे गेंदबाज़ रहे, जबकि इब्राहिम ताकाहाशी (1/13) ने भी एक विकेट लिया।

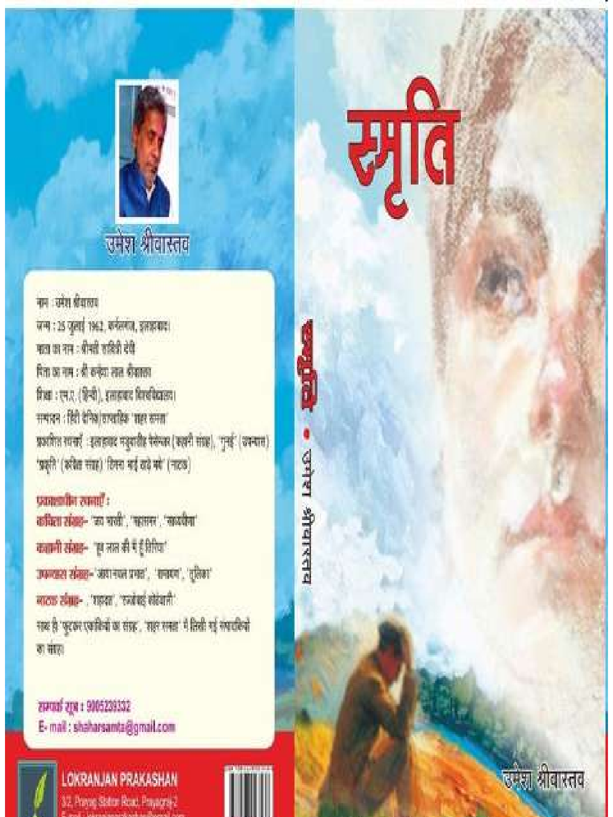

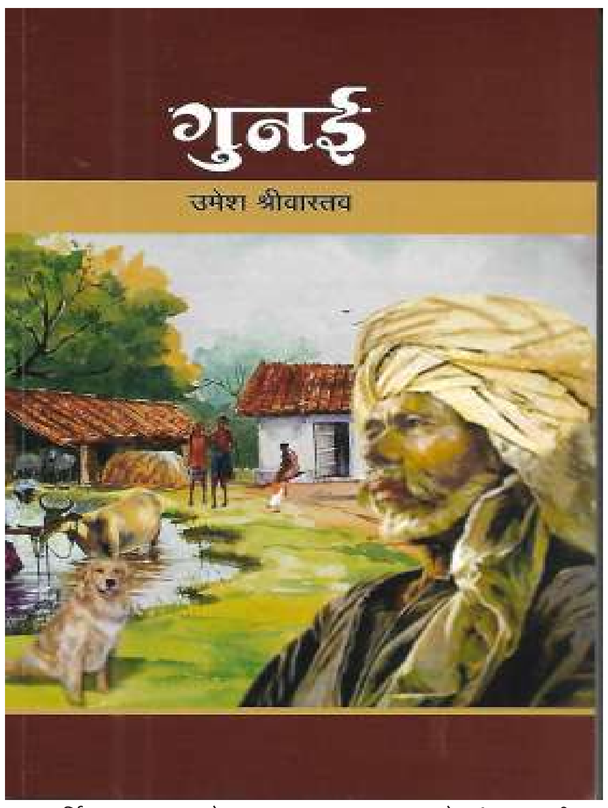

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

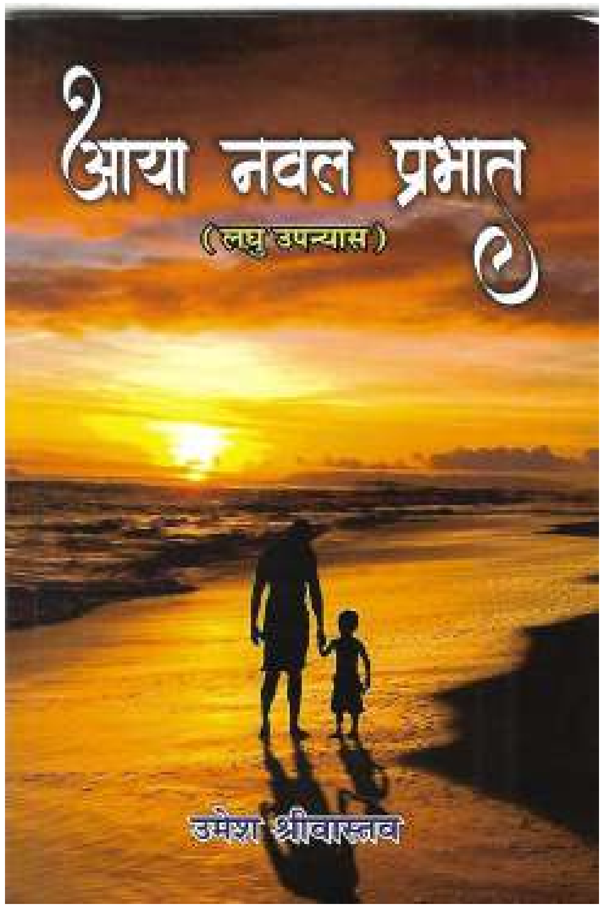

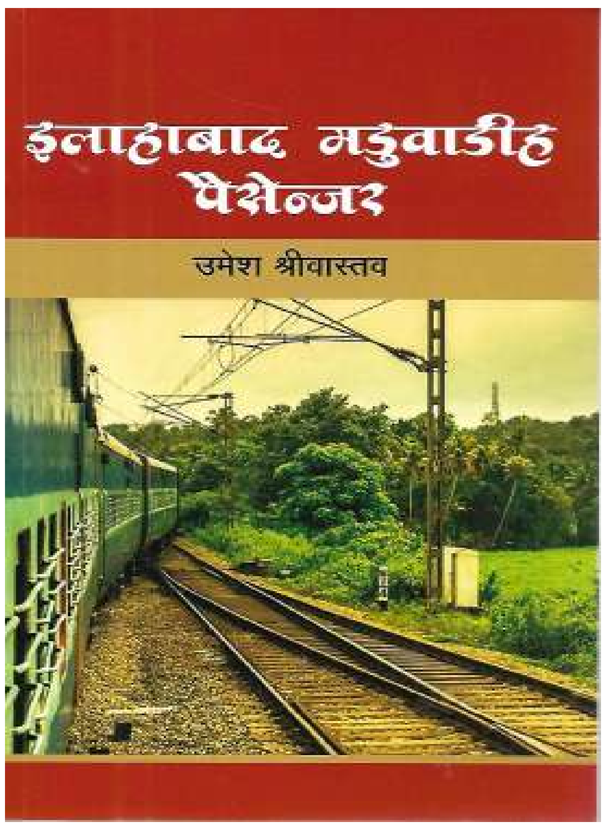

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

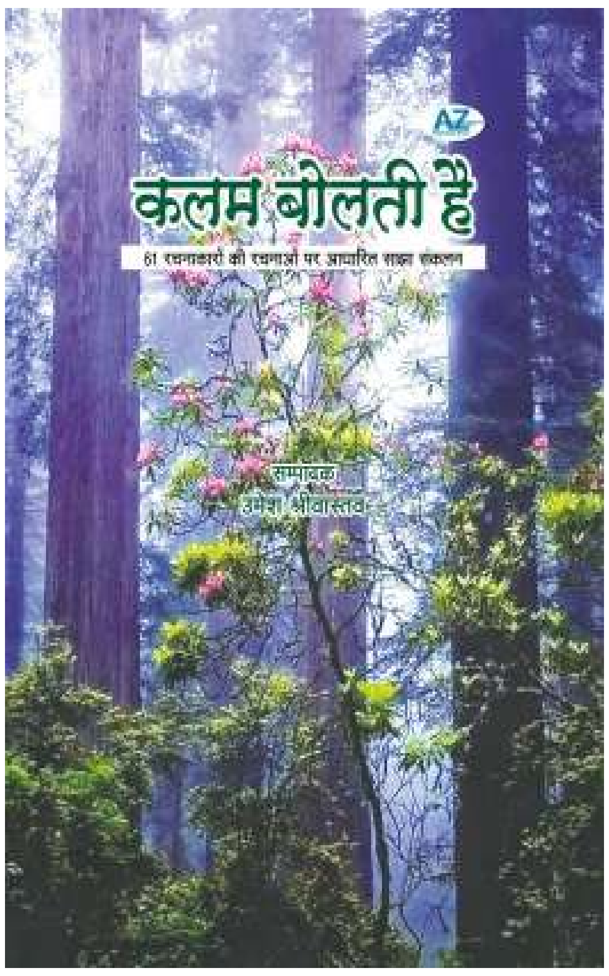

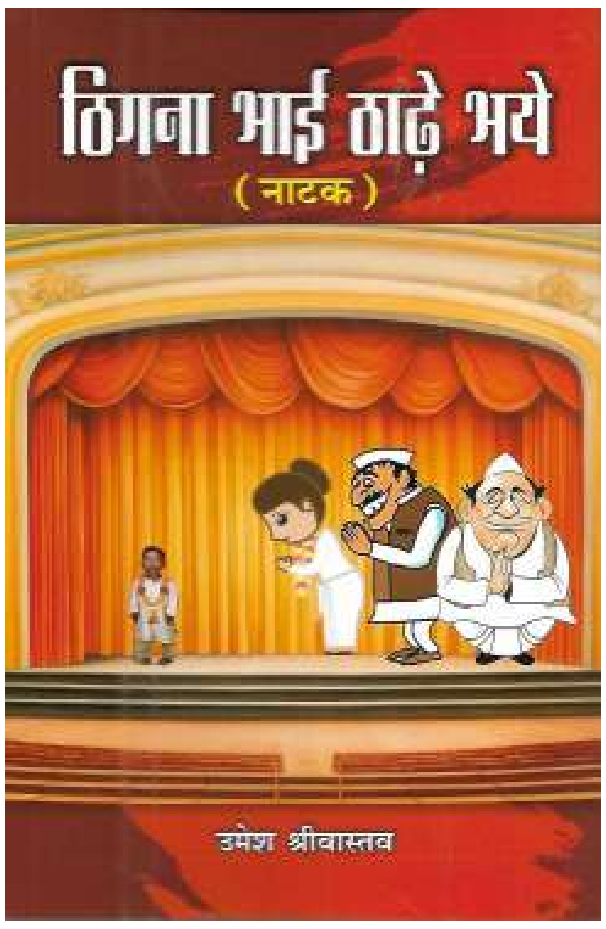

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

जीएफआर मीडिया बंद करेगी प्यूर्तो रिको के दो अखबारों का प्रिंट संस्करण, केवल डिजिटल रहेंगे चालू

प्यूर्तो रिको के दो प्रमुख अखबारों ने आने वाले दिनों में अपने प्रिंट संस्करण बंद करके केवल डिजिटल रूप में उपलब्ध रहने की घोषणा की है। यह कदम दुनियाभर में प्रिंट मीडिया से डिजिटल माध्यम की ओर बढ़ते रुझान का हिस्सा है। प्यूर्तो रिको की कंपनी जीएफआर मीडिया ने सोमवार को कहा कि यह निर्णय उपभोक्ताओं की बदलती आदतों को देखते हुए लिया गया है। यह कंपनी 'एल नुएवो डिया' और 'प्रिमेरा होरा' अखबार प्रकाशित करती है। अखबारों के अनुसार, 'प्रिमेरा होरा' का अंतिम प्रिंट संस्करण 24 सितंबर को और 'एल नुएवो डिया' का अंतिम प्रिंट संस्करण 27 सितंबर को प्रकाशित होगा। जीएफआर मीडिया की प्रकाशक मारिया लुइसा फेरे रेंगल ने एक बयान में कहा, "हम 21वीं सदी के प्यूर्तो रिको के साथ आगे बढ़ रहे हैं, जहां आज नौ करोड़ से अधिक प्यूर्तो रिकन लोग द्वीप, अमेरिका, यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों में रहते हैं। हम हमेशा प्यूर्तो रिको के साथ रहे हैं और आगे भी जहां–जहां प्यूर्तो रिको होगा, वहां मौजूद रहेंगे।" यह तत्काल स्पष्ट नहीं हो सका कि इस फैसले से कितने लोगों की नौकरी जाएगी। जीएफआर मीडिया के एक प्रवक्ता ने कहा कि फिलहाल कंपनी की ओर से आधिकारिक बयान के अलावा कोई अन्य टिप्पणी नहीं की जाएगी। प्यूर्तो रिकन पत्रकार संघ के अनुसार, 2015 से 2025 के बीच जीएफआर मीडिया समेत कई कंपनियों के मालिक ग्रुपो फेरे रेंगल ने यूनियन से जुड़े कर्मचारियों की संख्या करीब 400 से घटाकर 100 से कम कर दी। ये दोनों अखबार अमेरिका के मुख्य भूभाग के उन दर्जनों अन्य अखबारों में शामिल हो गए हैं, जिन्होंने विज्ञापन आय में गिरावट और उपभोक्ताओं की बदलती आदतों के कारण लागत कम करने के लिए ऐसे कदम उठाए हैं या पूरी तरह बंद हो गए हैं। गैर–लाभकारी मीडिया संस्थान पॉयंटर के अनुसार, अमेरिका में पिछले दो दशकों में करीब 3,500 अखबार बंद हो चुके हैं, जिससे अखबारों की 2.70 लाख से अधिक नौकरियां खत्म हुई हैं। 'एल नुएवो डिया' का प्रकाशन 1970 में शुरू हुआ था। इसके पहले पन्ने पर डोमिनिकन गणराज्य में जोआक्विन बालागेर के राष्ट्रपति चुने जाने और प्यूर्तो रिकन रम के लिए शहद की कमी से जुड़ी खबरें प्रकाशित हुई थीं। 2019 में 'एल नुएवो डिया' ने पहली बार अपना पहला पन्ना अंग्रेजी में प्रकाशित किया था। 'एल नुएवो डिया' ने 1997 में अपनी डिजिटल वेबसाइट शुरू की थी, उसी साल 'प्रिमेरा होरा' का प्रकाशन भी शुरू हुआ था।

मलेशिया में 30 दिन की वीजा–मुक्त सुविधा पर नौकरी तलाशने वालों को भारतीय उच्चायोग की चेतावनी

भारत ने मंगलवार को मलेशिया में अपने नागरिकों को सलाह दी कि वे रोजगार की तलाश के लिए देश की 30 दिन की वीजा–मुक्त प्रवेश सुविधा का इस्तेमाल न करें। कुआलालंपुर स्थित भारतीय उच्चायोग ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी एक परामर्श में कहा कि उसने मलेशिया पहुंचने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या में "उल्लेखनीय वृद्धि" देखी है, जिन्हें "नौकरी के झूठे वादों के जरिए बेईमान एजेंटों द्वारा गुमराह किया जा रहा है।" उच्चायोग ने कहा कि 30 दिन की वीजा–मुक्त प्रवेश सुविधा केवल पर्यटन और सामाजिक यात्राओं के लिए है तथा इसके तहत रोजगार की अनुमति नहीं है। परामर्श में कहा गया है, "मलेशिया में रोजगार की तलाश के लिए 30 दिन की वीजा–मुक्त सुविधा का इस्तेमाल करके पहुंचने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कुआलालंपुर स्थित भारतीय उच्चायोग पर्यटक वीजा पर मलेशिया की यात्रा करने वाले भारतीय नागरिकों को नौकरी का प्रस्ताव स्वीकार करने के खिलाफ आगाह करता है।" इसमें कहा गया, "कई भारतीय नागरिकों को बेईमान एजेंट नौकरी के झूठे वादे करके गुमराह करते हैं, जिसके कारण उन्हें तय अवधि से अधिक समय तक रुकने, अवैध स्थिति में रहने, शोषण, हिरासत और कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ता है। यह आव्रजन नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है, क्योंकि भारतीय पासपोर्ट धारकों को मलेशिया में 30 दिनों तक रहने की अनुमति देने वाली वीजा–मुक्त प्रवेश सुविधा केवल पर्यटन और सामाजिक यात्राओं के लिए दी जाती है।" उच्चायोग ने परामर्श में कहा है कि "वास्तविक पर्यटकों को मलेशिया पहुंचने पर आव्रजन संबंधी समस्याओं से बचने के लिए वैध और सत्यापित किए जा सकने वाले दस्तावेज साथ रखने चाहिए। इनमें वापसी का पुष्ट टिकट, होटल की बुकिंग, आगमन की तारीख से तीन दिन पहले मलेशिया डिजिटल आगमन कार्ड (एमडीएसी) ऑनलाइन जमा किए जाने का प्रमाण और कम से कम छह महीने की वैधता वाला पासपोर्ट शामिल है।" उच्चायोग ने "सख्ती से सलाह दी" है कि भारतीय नागरिक कार्य परमिट या 'वीजा विद रेफरेंस' (वीडीआर) के बिना काम या रोजगार के उद्देश्य से मलेशिया की यात्रा न करें।

बिगड़ती पृथ्वी की सेहत सुधारने पर वैश्विक वार्ता शुरू

वैज्ञानिकों के पृथ्वी के लगातार बिगड़ते स्वास्थ्य का आकलन करने के बीच दुनिया भर के नेताओं ने सोमवार को इसे जल्द सुधारने के उपायों पर एक सप्ताह तक चलने वाली वार्ता की शुरुआत की और इस दौरान अक्षय ऊर्जा के तेजी से विस्तार को उम्मीद की किरण के रूप में देखा गया। वार्ता में इस बात पर भी चर्चा होगी कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और उसके लिए बड़ी मात्रा में बिजली एवं पानी की खपत करने वाले डेटा केंद्रों का बढ़ता विस्तार जलवायु संकट को बढ़ाने के साथ–साथ उसके समाधान में भी मदद कर सकता है। हर साल संयुक्त राष्ट्र महासभा और न्यूयॉर्क जलवायु सप्ताह के दौरान वैश्विक तापमान वृद्धि पर चर्चा होती है, लेकिन कार्रवाई अपेक्षाकृत कम होती है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
.919450482227

डोनाल्ड ट्रंप और शी जिनफिंग शिखर वार्ता: व्यापार, ताइवान और तकनीक पर रहेगा जोर

कैंब्रिज। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीन के राष्ट्रपति शी जिनफिंग के बीच होने वाली आगामी शिखर बैठक में तीन प्रमुख मुद्दे– व्यापार, तकनीक और ताइवान (थ्री टी) फिर चर्चा के केंद्र में रहेंगे। हालांकि, किसी बड़े बदलाव वाले समझौते की संभावना कम दिखाई दे रही है। अमेरिका में 24 सितंबर से शुरू होने वाली इस बैठक में इन मुद्दों पर चर्चा होने की उम्मीद है। पिछली मई 2026 की बैठक में भी यही विषय प्रमुख रहे थे। इस बार कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में तेजी से हो रहे बदलावों के कारण तकनीक का मुद्दा अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

व्यापार में मामूली बदलाव की संभावना

सबसे तात्कालिक लेकिन अपेक्षाकृत आसान मुद्दा व्यापार का होगा। करीब एक साल पहले दक्षिण कोरिया के बुसान में ट्रंप और शी के बीच हुए समझौते के तहत अमेरिका ने उच्च तकनीक वाले उत्पादों पर कुछ निर्यात नियंत्रण हटाने और चीनी सामानों पर लगे भारी शुल्क कम करने पर सहमति जताई थी। इसके बदले चीन ने अमेरिका को महत्वपूर्ण और दुर्लभ खनिजों की आपूर्ति सीमित नहीं करने का वादा किया था। अब इस समझौते के नवीनीकरण का समय है। दोनों पक्ष मौजूदा व्यवस्था को जारी रखना चाहेंगे और कुछ छोटे बदलावों के साथ नया समझौता पुराने जैसा ही रह सकता है। दोनों देशों ने पहले गैर–संवेदनशील अमेरिकी–चीनी कारोबारी हितों का आकलन करने के लिए एक "बोर्ड ऑफ ट्रेड" बनाने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन इसके स्वरूप को लेकर अभी स्पष्टता नहीं है। एक प्रस्तावित "बोर्ड ऑफ इन्वेस्टमेंट" पर भी अभी अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। चीन इस बैठक में प्रमुख चीनी कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को शामिल करने का प्रस्ताव दे सकता है, जैसा कि ट्रंप की बीजिंग यात्रा में एनवीडिया के जेन्सेन हुआंग और टेस्ला के एलन मस्क शामिल हुए थे।

ताइवान का मुद्दा अधिक जटिल

ताइवान ऐसा मुद्दा है जिस पर किसी समाधान की संभावना कम है। ट्रंप ने चीन की ओर से हमले की स्थिति में ताइवान की रक्षा करने की स्पष्ट प्रतिबद्धता से दूरी बनाए रखी है और अमेरिका की पुरानी "रणनीतिक अस्पष्टता" वाली नीति को दोहराया है। चीन भी फिलहाल युद्ध के बजाय ऐसे तरीकों को प्राथमिकता देता है, जिनसे ताइवान को उसके नियंत्रण में लाया जा सके। ताइवान में जनवरी 2028 का राष्ट्रपति चुनाव वहां के भविष्य के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है, खासकर यदि चीन के प्रति अपेक्षाकृत नरम रुख रखने वाली कुओमिन्तांग पार्टी सत्ता में आती है। बीजिंग ताइवान के आसपास अपनी सैन्य क्षमता बढ़ाता रहेगा, लेकिन साथ ही आर्थिक प्रोत्साहन और दबाव के जरिए ताइवान के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को सीमित करने की कोशिश कर सकता है। अन्य अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा सीमित रहने की संभावना है। चीन ईरान युद्ध को लेकर अपनी नाराजगी जाहिर कर सकता है, जबकि अमेरिका रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर प्रतिबंध लगाने वाले नए कानून का उल्लेख कर सकता है। हालांकि, इन मुद्दों से तत्काल बड़े बदलाव की संभावना कम है।

एआई पर बातचीत, लेकिन प्रगति सीमित

तकनीक, खासकर एआई के क्षेत्र में दोनों देश वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप कूटनीति बनाने की कोशिश करेंगे। मई की बैठक में एआई नियमन पर चर्चा ने कई लोगों को चौंकाया था। दोनों देशों ने माना था कि एआई के बढ़ते महत्व और अनिश्चितताओं को देखते हुए इसके नियमन पर बातचीत संभव और जरूरी हो सकती है। 20 सितंबर को अमेरिका और चीन ने एआई से जुड़े राष्ट्रीय सुरक्षा जोखिमों की जानकारी साझा करने के लिए "हॉटलाइन" बनाने के विचार पर भी चर्चा की थी। अमेरिका में अनियंत्रित एआई को लेकर चिंता बढ़ रही है। वहीं, चीन में स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में एआई के लाभों के कारण लोगों का नजरिया कुछ नरम हुआ है, लेकिन वहां भी यह चिंता है कि एआई से अर्थव्यवस्था को कितना फायदा होगा और रोजगार पर इसका क्या असर पड़ेगा। दोनों देशों के पास एआई नियमन पर बातचीत करने के कारण हैं। अमेरिका में डेटा केंद्रों को लेकर लोगों की चिंताएं हैं, जबकि चीन में एआई से जुड़ी अनियंत्रित स्थिति को लेकर राजनीतिक चिंताएं भी हैं। हालांकि, अमेरिका और चीन के बीच एआई क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा जारी है और दोनों देशों की सरकारें तथा निजी कंपनियां ऐसे समझौते करने को तैयार नहीं दिखतीं, जिनसे दूसरे पक्ष को लाभ मिल सके। इसलिए एआई पर बातचीत जारी रहने की संभावना है, लेकिन निकट भविष्य में किसी बड़े समझौते की उम्मीद कम है।

संवाद बनाए रखना भी अहम

ट्रंप–शी बैठक किसी बड़े नीतिगत बदलाव से ज्यादा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दुनिया की दो सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्थाओं के बीच संवाद बनाए रखने का संकेत है। दोनों नेता आगे वाले समय में जी20 और एपीईसी शिखर सम्मेलनों में भी मिल सकते हैं। छह महीने से कुछ अधिक समय में चार मुलाकातें होना संवाद बनाए रखने का संकेत माना जा सकता है। हालांकि, व्यापार, तकनीक और ताइवान जैसे तीनों मुद्दों पर दोनों देशों के हितों में मूलभूत अंतर बना हुआ है।

तुर्की स्कूल हमले में 11 घायल और 2 की हालत गंभीर

पश्चिमी तुर्की में एक हाई स्कूल के पास एक हमलावर की गोलीबारी में कम से कम 11 लोग घायल हो गए। संदिग्ध हमलावर को गिरफ्तार कर लिया गया है। न्याय मंत्री अकिन गुरलेक ने एक्स पर एक बयान में कहा कि घायलों में से कम से कम दो की हालत गंभीर है। उन्होंने कहा कि हमले की वजह अभी पता नहीं चल पाई है। प्रांतीय गवर्नर के कार्यालय के अनुसार, यह हमला मनीसा प्रांत के तुर्गुतलू ज़िले में एक वोकेशनल और टेक्निकल हाई स्कूल के सामने हुआ। पुलिस और मेडिकल टीमों को तुरंत घटनास्थल पर भेजा गया। हैबरटर्क न्यूज़ चैनल ने बताया कि हमलावर उसी स्कूल का छात्र था। चैनल के मुताबिक, वह अपनी दादी के घर से शॉटगन लेकर आया था और स्कूल के पास अंधाधुंध गोलीबारी करने के बाद पैदल ही भागने की कोशिश की। गुरलेक ने बताया कि गोलीबारी की घटना की जांच के लिए दो मुख्य अभियोजक नियुक्त किए गए हैं। इस जांच में उन दावों की भी पड़ताल की जाएगी कि स्कूल में छात्र को परेशान किया जाता था। उन्होंने आगे कहा कि जांच के सिलसिले में हमलावर के माता–पिता और दादा को हिरासत में ले लिया गया है; बंदूक उसके दादा की ही थी। कुमहुरीयेत अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक, परेशान माता–पिता स्कूल पहुंचे और उनकी पुलिस के साथ झड़प हो गई, जिसके बाद पुलिस ने इमारत में घुसने का रास्ता रोक दिया था। यह हमला इस साल की शुरुआत में तुर्की में हुई स्कूल में गोलीबारी की दो घटनाओं के कुछ महीनों बाद हुआ है, जिन्होंने देश को हिलाकर रख दिया था। पिछले हफ्ते शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में ही शिक्षण संस्थानों में सुरक्षा बढ़ा दी गई थी। दक्षिण–पूर्व के सानलिउर्फा प्रांत के एक हाई स्कूल में एक पूर्व छात्र के गोलीबारी करने से 16 लोग घायल हो गए, जिनमें से ज़्यादातर छात्र थे। हमलावर ने बाद में खुदकुशी कर ली। अगले दिन, पास के कहरामनमारस प्रांत में एक 14 साल के छात्र ने अपने स्कूल के दो क्लासरूम में गोलीबारी की, जिसमें आठ छात्र और एक टीचर की मौत हो गई और 13 अन्य घायल हो गए। हमलावर को पुलिस ने मार गिराया। पश्चिमी तुर्की में स्कूल के पास हुई गोलीबारी में 11 लोग घायल हो गए, जिनमें से दो की हालत गंभीर है। जांच करने वाले इस घटना के मकसद और उन दावों की भी जांच कर रहे हैं कि संदिग्ध परेशान (बुली) किया गया था।

रूस–यूक्रेन हमले तेज़ हुए, ज़ेलेंस्की ने यूएन में अमेरिका का समर्थन मांगा

रूस और यूक्रेन के बीच रात भर लंबी दूरी के हमले हुए। रूसी मिसाइलों और ड्रोनों ने यूक्रेन के कम से कम चार इलाकों को निशाना बनाया, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। वहीं, यूक्रेनी सेना ने दावा किया कि उन्होंने रूस की एक और तेल रिफाइनरी को नुकसान पहुँचाया है। यह घटनाक्रम तब हुआ जब यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की छ जनरल असेंबली में शामिल होने के लिए अमेरिका (न्यूयॉर्क) गए हुए थे। वहाँ उन्हें दुनिया के नेताओं जिनमें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी शामिल थे। मिलकर रूस के साढ़े चार साल से ज़्यादा समय से चल रहे पूर्ण पैमाने के हमले को खत्म करने के लिए समर्थन मांगना था। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस सालाना कार्यक्रम में शामिल नहीं हो रहे हैं। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने मंगलवार को कहा कि फ्रांस

यूक्रेन को उसके पावर ग्रिड की सुरक्षा में मदद के लिए और रडार देगा। उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा कि उन्होंने ट्रम्प के साथ मॉस्को और कीव के बीच एनर्जी इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमलों को रोकने और ब्लैक सी में हमलों पर रोक लगाने (मोरेटोरियम) की संभावना पर चर्चा की थी। ज़ेलेंस्की ने अपनी न्यूयॉर्क यात्रा की शुरुआत अमेरिकी सीनेटरों से मिलकर और यूक्रेन के लिए उनके मज़बूत द्विदलीय समर्थन के लिए उन्हें धन्यवाद देकर की। साथ ही, उन्होंने हाल ही में रूस पर कड़े प्रतिबंध लगाने वाले बिल को पास करने के लिए भी उनका शुक्रिया अदा किया, जिस पर ट्रम्प ने हस्ताक्षर करके उसे कानून बना दिया है। उन्होंने कहा कि जब यह बिल पूरी तरह से लागू हो जाएगा, तो शांति और सुरक्षा और करीब आ जाएगी। ज़ेलेंस्की ने सोशल मीडिया पर यह भी कहा कि उन्होंने सीनेटरों को तनाव कम करने के उपायों के बारे में अपने प्रस्तावों की जानकारी दी है, जिन पर वह मंगलवार को बाद में ट्रम्प के साथ चर्चा करने वाले हैं। वह ट्रम्प पर और अधिक अमेरिकी–निर्मित पैट्रियट एयर डिफेंस सिस्टम भेजने के लिए फिर से ज़ोर देने की योजना बना रहे हैं; कीव का कहना है कि रूस की बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने के लिए उसे इनकी ज़रूरत है। ज़ेलेंस्की काला सागर के रास्ते यूक्रेनी अनाज और खेती से जुड़े दूसरे उत्पादों को दुनिया भर के बाज़ारों तक पहुँचाने के लिए भी समर्थन मांग रहे हैं। माल ढोने वाले जहाज़ों पर रूसी हमलों ने कीव के एक्सपोर्ट को बुरी तरह प्रभावित किया है, जिससे यूक्रेन की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचा है और ग्लोबल सप्लाई पर भी खतरा पैदा हो गया है। इस युद्ध का दुनिया भर में व्यापक असर पड़ा है। ट्रंप ने कहा कि मॉस्को द्वारा यूक्रेन के पावर ग्रिड पर हमले के बाद कीव रूसी रिफाइनरियों पर बार–बार हुए हमलों के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डीज़ल की कमी हुई और कीमतें तेज़ी से बढ़ीं। उन्होंने यह भी कहा कि ईरान युद्ध के कारण होर्मुज़ जलडमरूमध्य से तेल की सप्लाई में कटौती से ग्लोबल सप्लाई की समस्या और गंभीर हो गई। पश्चिमी अधिकारियों का कहना है कि इस युद्ध में 5,00,000 से ज़्यादा रूसी सैनिक मारे गए हैं। यूक्रेन ने कहा कि उसने रात भर चले एक हमले में मॉस्को के दक्षिण–पूर्व में समारा स्थित कुइबिशेव तेल रिफाइनरी पर हमला किया। यूक्रेनी स्पेशल फोर्सेज़ ने बताया कि कई ड्रोन अपने लक्ष्यों से टकराए, जिससे रोज़नेफ्ट के मालिकाना हक वाली इस सुविधा में भीषण आग लग गई। बयान में रिफाइनरी को मध्य रूस के लिए ईंधन का एक प्रमुख स्रोत बताया गया, जहाँ पेट्रोल, डीज़ल, फ्यूल ऑयल और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों का उत्पादन होता है। यूक्रेन ने कहा कि उसने पिछले साल जून में भी इसी रिफाइनरी पर हमला किया था। समारा क्षेत्र के गवर्नर व्याचेस्लाव फेडोरिशचेव ने बताया कि हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। उन्होंने कहा कि छ्ड्रुश्मन ने औद्योगिक ठिकानों को निशाना बनाया लेकिन यह नहीं बताया कि कौन से ठिकाने थे। रूस के रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि उसकी सेना ने रूस के 14 क्षेत्रों और गैर–कानूनी रूप से कब्ज़े में लिए गए क्रीमिया प्रायद्वीप के ऊपर 297 यूक्रेनी ड्रोन मार गिराए। यूक्रेन की वायु सेना ने बताया कि रूस के रात भर चले हमलों में एंटी–शिप मिसाइलें, बैलिस्टिक मिसाइलें, क्रूज़ मिसाइलें और 200 से ज़्यादा ड्रोन शामिल थे। निप्रोपेट्रोव्स्क क्षेत्रीय सैन्य प्रशासन के प्रमुख ओलेक्सांद्र हंझा ने बताया कि इन हमलों में मध्य यूक्रेन के शहर निप्रो में चार लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने बताया कि यूक्रेन के अलग–अलग इलाकों में हुए हमलों से घरों, कारोबारों और स्टोरेज सुविधाओं को नुकसान पहुँचा और कम से कम पाँच लोग घायल हो गए। कीव के अधिकारियों ने बताया कि राजधानी में पाँच लोग घायल हुए। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसकी सेना ने यूक्रेन के चार इलाकों में मेटल और केमिकल इंडस्ट्री, फ्यूल और एनर्जी सेक्टर, मिलिट्री–इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स और पोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं पर हमले किए। मंत्रालय ने बताया कि हमलों के लक्ष्यों में कीव में मौजूद श्फायर पॉइंट्स प्लांट भी शामिल था, जहाँ लंबी दूरी की क्रूज़ मिसाइलों के पार्ट्स बनाए जाते हैं, और मध्य पोल्टावा इलाके में मौजूद एक तंबाकू फैक्ट्री भी शामिल थी, जिसका इस्तेमाल छोटे हथियारों के गोला–बारूद बनाने में किया जा रहा था। हाल के हमलों ने यह साफ़ कर दिया है कि लड़ाई अब भी रोज़ाना हवाई हमलों के ज़रिए लड़ी जा रही है, जबकि मोर्चे पर हालात में बहुत कम बदलाव आया है। दोनों पक्षों ने नुकसान और हताहतों की जानकारी दी है, वहीं ज़ेलेंस्की यूक्रेन की युद्ध की कोशिशों और तनाव कम करने के प्रस्तावों के लिए विदेशों से और समर्थन जुटाने की कोशिश कर रहे हैं।

वैश्विक दबाव के बीच यूएन में पहले बहुपक्षवाद शिखर सम्मेलन की भारत ने की सह-मेजबानी

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने सोमवार को संयुक्त राष्ट्र में बहुपक्षवाद पर आयोजित पहले शिखर सम्मेलन की सह–मेजबानी की और कहा कि यह पहल ऐसे समय में हुई है जब "वैश्विक व्यवस्था दबाव में है"। भारत ने जोर दिया कि अधिक भागीदारी वाली विचार–विमर्श की प्रक्रिया तथा पारदर्शी निर्णय लेने की व्यवस्था अब बेहद जरूरी है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के उच्च स्तरीय 81वें सत्र के इतर आयोजित पहले 'पार्टनर्स फॉर मल्टीलेटरलिज्म, इंटरनेशनल लॉ, पीस एंड प्रॉस्पेरिटी' (बहुपक्षवाद, अंतरराष्ट्रीय कानून, शांति और समृद्धि के लिए साझेदार) यानी पी4एम शिखर सम्मेलन की सह–अध्यक्षता की।

उनके साथ ऑस्ट्रेलिया, बारबाडोस, ब्राजील, कनाडा और केन्या के नेताओं ने भी सम्मेलन की सह–मेजबानी की। संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित सम्मेलन में जयशंकर ने कहा, "भारत को सह–प्रायोजक के रूप में शामिल होकर खुशी है। हम ऐसे समय में मुलाकात कर रहे हैं जब वैश्विक व्यवस्था दबाव में है।" उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दशकों में दुनिया ने शक्ति संतुलन में लगातार बदलाव देखा है, जो लंबे समय से अपेक्षित संरचनात्मक परिवर्तन था। जयशंकर ने कहा, "हालांकि, तीव्र प्रतिस्पर्धा, भू–राजनीतिक तनाव और वास्तविक संघर्षों ने इसे पूरी तरह अलग स्वरूप दे दिया है। यदि इसे अनियंत्रित छोड़ दिया गया, तो यह अंतरराष्ट्रीय सहयोग की मूल भावना पर सवाल खड़ा कर सकता है। इसलिए इस समय बहुपक्षवाद का मजबूती से सामना आना बेहद जरूरी है।" उन्होंने कहा कि जारी संघर्षों के मामले में व्यापक शांति के लिए प्रयास करते हुए भी कुछ विशिष्ट पहलुओं पर ध्यान दिया जा सकता है। जयशंकर ने कहा, "ईंधन, खाद्य, उर्वरक और वित्त की '4एफ' समस्या को अपने हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता।"

ग्रीनलैंड पर डोनाल्ड ट्रंप के रुख से डेनमार्क और अमेरिका में बढ़ा तनाव

नाटो के सहयोगी डेनमार्क के अर्ध–स्वायत्त क्षेत्र, ग्रीनलैंड पर नियंत्रण को लेकर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दिलचस्पी के बारे में पहली बार 2019 में सार्वजनिक रूप से पता चला। यहां उन घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा है जिनके कारण वॉशिंगटन और उसके यूरोपीय सहयोगियों के बीच संकट पैदा हुआ। अगस्त, 2019 रू अपने पहले कार्यकाल के दौरान, ट्रंप ने अमेरिका के लिए ग्रीनलैंड खरीदने में दिलचस्पी दिखाई, लेकिन कहा कि यह "अभी प्राथमिकता वाली बात नहीं है।"

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्प्यूटिंग बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।